ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

भाद्रपद २०७८ सितम्बर २०२१

टोकियो ओलंपिक २०२१

जय है जय है जय है
जय जय जय जय है

नीरज चोपड़ा (स्वर्ण)

मीराबाई चानू (रजत)

रवि कुमार
दहिया (रजत)

₹२०

लवलीना बोरगोहेन, पी. वी. सिंधु, बजरंग पूनिया, पुरुष हॉकी टीम ने कांस्य पदक

कविता

चाँद सितारों की दुनिया में

जुगनू-से जलते-बुझते तारे
टिम-टिम करते हुए हवा में।
आओ बच्चो! घूमें हम सब
चाँद-सितारों की दुनिया में।।
आसमान में अगणित तारे
छोटे-छोटे प्यारे-प्यारे।
झिलमिल-झिलमिल करते रहते
हवा के झोंकों से हैं सारे।।
असल में होते बहुत बड़े ये
मगर हैं हम से दूर खड़े।
है कितना यह दृश्य विहंगम
चंदा के संग दिखें जड़े।।
साड़ी के पल्लू पर माँ की
टंके-टंकाए लेशों जैसे।
आसमान के आँचल पर हैं
चाँद-सितारे लगते ऐसे।।
उत्तर में सबसे चमकीला
तारों में ध्रुव तारा दिखता।
चाहे जितनी घनी हो रजनी
सदा सही दिशा बतलाता।।
एक-से तारों का जो अंचल
मिल कहलाता तारामंडल।
मिल्कीवे या दुग्धमेखला
अरबों तारों का परिमंडल।।
आकाशगंगा नाम मंदाकिनी
जिसका हिस्सा है सौरमंडल।
सूरज है वह तारा जिससे
आलोकित सारा दिग्मंडल।।
चाँद-सितारों से निर्मित यह
रंग-बिरंगा परीधाम है।।
आओ बच्चो! घूमें हम सब
चाँद-सितारों का ये ग्राम है।।

– धर्मेश कुमार सिंह, गोण्डा (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

भाद्रपद २०७८ ▪ वर्ष ४२
सितम्बर २०२१ ▪ अंक ३

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

भारत को जगसिरमोर बनाना हर सच्चे भारतीय का लक्ष्य है। रणांगण हो या क्रीडांगन, व्यापार, कला, विज्ञान या जीवन के कोई भी क्षेत्र में प्रत्येक विजय पर सारा भारत गर्वित होता है।

टोकियो ओलंपिक में सात पदक प्राप्त कर भारत का मस्तक फिर से सम्मानसहित ऊँचा हुआ है। भारत की दृष्टि से खेल जगत में ओलंपिक विजय के क्षेत्र में यह एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक पृष्ठ जुड़ा है।

हमारे **नीरज चौपड़ा** ने भाला फेंक में स्वर्ण पदक अर्जित किया तो **मीराबाई चानू** ने भारोत्तोलन में व **रवि दहिया** ने कुश्ती में रजत पदक प्राप्त किया है। **पी. वी. सिंधु** (बेडमिण्टन), **लवलीना बोरगोहेन** (मुक्केबाजी), **बजरंग पूनिया** (फ्री स्टाईल कुश्ती) ने कांस्य पदक अर्जित कर विश्व पटल पर अपना नाम गौरवपूर्ण ढंग से अंकित किया। हॉकी हमारा राष्ट्रीय खेल है भारत की **पुरुषों के हॉकी दल** ने इस बार कांस्य पदक पाया यह एक गौरवशाली उपलब्धि है।

अपने इन खिलाड़ियों का प्रधानमंत्री जी ने स्वयं बात करके उत्साहवर्द्धन किया। हम सब भी हर्षित हैं, गर्वित हैं, अपने इन खेल वीरों के पराक्रम पर। हार्दिक बधाई, अभिनंदन।

* * * * *

इसी माह हिन्दी का भी विशेष स्मरणीय दिवस है। पुराने समय से संस्कृत भाषा मुख्यरूप से हमारी सांस्कृतिक एकता की भी अभिव्यक्ति करती रही है लेकिन जब विविध कारणों से अब वह उतनी प्रचलित नहीं रही तो उसका स्थान हिन्दी को मिलना चाहिए था। यह स्वाभाविक भी होता क्योंकि हिन्दी भारत में अधिक प्रांतों में बोली जाती है और अहिन्दी प्रान्तों में भी प्राय: समझी जाती है। साथ ही इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने में घुला-मिला लेने की अद्‌भुत क्षमता भी है। श्री. वासुदेव शरण अग्रवाल इसे **विभिन्न नदियों से बना समुद्र**, महीयसी महादेवी इसे **राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत** मानती हैं। महात्मा गाँधी मूलत: गुजराती भाषी थे पर वे देश की उन्नति के लिए हिन्दी को राष्ट्रीय व्यवहार में लाने के इतने पक्षधर थे कि अहिन्दी भाषी दक्षिणी प्रांतों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं स्वीकार के लिए उन्होंने एक अविस्मरणीय आन्दोलन चलाया।

विदेशी विद्वान वाल्टर चेनिंग **'' विदेशी भाषा का स्वतंत्र राष्ट्र के राज काज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।''** कहकर **'अपनी भाषा'** के प्रयोग की ही महत्व सिद्ध करते हैं। **'हिन्दी'** और उसकी लिपि **'देवनागरी'** का प्रयोग हम सब गर्व से करें; स्वाभिमान से करें। हमारा प्रत्येक दिन 'हिन्दी दिवस' हो। तभी हम **'हमारी भाषा हिन्दी है'** कहने के सच्चे अधिकारी होंगे।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

कहानी

- मुट्ठी में जीवन -डॉ. रंजना जायसवाल ०५
- प्यार का चाबुक -संजीव जायसवाल 'संजय' ०८
- गुस्सा थूक दिया -डॉ. संगीता बलवंत १६
- ऊँची उड़ान -डॉ. राकेश चक्र २२
- मोनू की मस्ती -रेनू मण्डल २८
- नहीं अभी नहीं -डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ३६
- जिद की हार -कुसुम अग्रवाल ४४
- मुझसे होगा -एस. भाग्यम् शर्मा ४८

छोटी कहानी

- कर भला हो भला -हेमंत यादव ३०
- एक पंथ दो काज -गोविन्द भारद्वाज ३३
- कमाल कर दिया -पूनम पाण्डे ४०

नाटक

- गोलू पढ़ेगा -महावीर रवांल्टा १२

प्रसंग

- वीर सावरकर और..... -अभय मराठे ३४

लघु आलेख

- गणपति जगवन्दन -शिखर चंद जैन ४७

बाल प्रस्तुति

- मातृभाषा वंदन है -विमलाकँवर राठौड़ ३२

कविता

- चाँद सितारों की..... -धर्मेश कुमार सिंह ०२
- विद्यालय की पतलून -शादाब आलम ०७
- हिन्दी अपनाएँ -रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक' ३५
- बंदर -गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र ५१

स्तंभ

- यह देश है वीर जवानों का-२१ १९
- संस्कृति प्रश्नमाला २५
- विषय एक कल्पना अनेक: शिक्षक
  - शिक्षक दिवस -डॉ. प्रीति प्रवीण खरे २६
  - शिक्षक भाग्य विधाता -सुधा मेठी २६
  - अध्यापक जी हमारे -शैलेन्द्र सरस्वती २७
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ३१
- छः अंगुल मुस्कान -विष्णु प्रसाद चौहान ३५
- आपकी पाती ३८
- आओ ऐसे बनें -मदनगोपाल सिंघल ४२
- पुस्तक परिचय ४६

चित्रकथा

- दो-दो उपहार -देवांशु वत्स ११
- पचास हजार -संकेत गोस्वामी ३९
- मेरे समोसे -देवांशु वत्स ४३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

मुट्ठी में जीवन

– डॉ. रंजना जायसवाल

बहुत समय पहले की बात है, एक छोटे से शहर में एक लड़का रहता था मनु। मनु स्वभाव से बहुत ही शरारती और उदण्ड स्वभाव का था। गली के कुत्तों को पत्थर से मारना, गाय के ऊपर पानी फैंक देना उसके रोज का काम था। दिनभर कोई न कोई उसकी शिकायत लेकर घर आता ही रहता था। उसकी माँ ने कभी प्यार से तो कभी डाँटकर उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया।

''मनु! किसी जीव को इस प्रकार से तंग करना ठीक नहीं, भगवान सब कुछ देख रहे हैं।''

''ऐसा कुछ नहीं माँ! तुम भी न!''

''मनु–सोचो उसको कितना कष्ट होता होगा, जानते हो भगवान से कुछ नहीं छिपता। वो आज नहीं तो कल दंड अवश्य देंगे।''

पर मनु को इन सब बातों से कोई प्रभाव नहीं पड़ता अब तो मुहल्ले के लोग भी अपने बच्चों को उसके साथ खेलने नहीं देते थे कि कहीं उसकी संगति में रहकर उनके बच्चे भी बिगड़ न जाएँ।

मनु बहुत अकेला पड़ गया था, मनु की माँ सब कुछ देख रही थी पर वो भी क्या करती। समाचार–पत्र और टी. वी. पर एक ही बात चल रही थी... हर ओर कोरोना के कारण सब लोग बहुत परेशान थे। कोई घर से बाहर नहीं निकलता था... मनु बार–बार घर के दरवाजे तक आता पर वहाँ कोई न होता। कुत्ते और गाय भी उसके डर के मारे दरवाजे पर नहीं आते।

मनु दिनभर टी. वी. पर वही सब कार्यक्रम देखकर ऊब गया था। पढ़ाई करने के लिए भी कुछ न था.. तब मनु की माँ ने एक उपाय निकाला।

''मनु! जरा चौके से अलमारी में से पीला रंग का डिब्बा निकाल लाओ।''

''माँ! आप ले लो न।''

माँ ने मनु को गुस्से से देखा, मनु समझ गया था कि अगर अब उसने टालमटोल की तो पिताजी भी घर पर ही हैं... वह मन मारकर रसोईघर से पीला डिब्बा उठा लाया।

''जानते हो मनु! इस डिब्बे में क्या है?''

''क्या है माँ?'' मनु ने उत्सुकता से पूछा।

''तुम स्वयं ही निकाल लो।''

मनु ने झट से अपना हाथ डिब्बे के अंदर डाला। गोल-गोल धनिया के दाने देख मनु का चेहरा उतर गया।

''क्या माँ! आप भी न , यह कैसी ठिठोली है।''

माँ ने मनु के छोटे-छोटे हाथों को पकड़ा और उद्यान की ओर ले गई।

''मनु! चल तुझे एक जादू सिखाती हूँ।''

''पर माँ यह तो धनिया के दाने हैं।''

''जानते हो मनु तुम्हें ऐसा लगता है कि यह केवल धनिया के दाने हैं पर तुम्हारे हाथों में तो किसी को जीवन देने का जादू है।''

मनु आश्चर्य से माँ को देख रहा था...

''आओ! तुम्हें जादू दिखाती हूँ।''

माँ ने खुरपी उठाई और मिट्टी खोदना प्रारंभ कर दिया। मनु बड़े ध्यान से सब कुछ देख रहा था। थोड़ी देर में माँ उद्यान की मिट्टी खोद डाली। माँ ने आँचल से अपने पसीने को पोछा।

''मनु! चल तू अब इन दानों को मिट्टी में बिखेर दे और हाँ प्रतिदिन पानी देना मत भूलना।''

''पर माँ! तुम तो जादू दिखाने वाली थीं।''

माँ के चेहरे पर मुस्कान आ गई। उन्होंने बड़े प्यार से मनु के सिर पर हाथ फेरा- ''बस थोड़ी सी प्रतीक्षा, अब यह तुम्हारा उत्तरदायित्व है इन बीजों की देखभाल करने का। फिर देखना जादू।''

मनु को तो जैसे अपने जीवन का लक्ष्य मिल गया, सुबह-सुबह उठते ही सबसे पहले वह उद्यान की ओर भागता। शायद अब तो कुछ जादू होगा- जो मनु घर में बैठे-बैठे बोर हो रहा था; अब उसका अधिकांश समय उद्यान में ही बीतता। एक दिन सुबह-सुबह जब वह उद्यान में गया तो धनिए के बीज में से कोपलें फूटने लगी थी। मनु की प्रसन्नता का ठिकाना न था। वह रसोईघर की ओर भागा।

''माँ! जल्दी से बाहर चलो, तुमने सच कहा था मेरे हाथों में जादू है। देखो न मैंने सचमुच में जादू कर दिया।''

मनु प्रसन्नता से नाथ रहा था उसने शीघ्र ही फोन करने अपने चाचा, नाना-नानी को बताया। अब मनु का समय उद्यान में और भी बीतने लगा। अपने छोटे-छोटे हाथों से उसने पूरे उद्यान को स्वच्छ कर दिया। मनु में आए इस परिवर्तन से माँ बहुत प्रसन्न थी। पर एक दिन सुबह-सुबह जब मनु की आँख खुली तो उद्यान के कई गमले टूटे हुए थे और मनु के नन्हें-नन्हें हाथों से बोए धनिए के छोटे-छोटे पौधे उजड़े हुए थे। माँ हाथ में झाड़ू लिए उद्यान में फैली सामग्री को समेटने में लगी थी। मनु जोर-जोर से रोने लगा।

''माँ-माँ! देखो न मेरे पौधे.. किसी ने मेरे सारे पौधे खराब कर दिए।''

माँ ने बड़े प्यार से मनु को अपने पास बैठाया और उसके आँसू पोंछते हुए कहा- ''देख रही हूँ बेटा! कल रात भोजन की खोज में बंदरों के झुंड ने अपना उद्यान उजाड़ दिया। मनु तुम्हें आज बहुत दु:ख हो रहा है न इन पौधों के नष्ट हो जाने से... कुछ ऐसा ही दु:ख उन निरीह प्राणियों को भी होता है जिन्हें तुम दिनभर बिना कोई कारण तंग करते हो। कभी पत्थर मारकर, कभी डंडे से, तो कभी पानी फेंककर। सोचो उन्हें भी कितनी पीड़ा होती होगी। अंतत: इन पौधों की तरह उनमें भी तो जीवन है। वे मूक प्राणी भी तो भगवान का जादू है।''

मनु को धीरे-धीरे अपनी माँ की बात समझ में आ रही थी।

''माँ! में वचन देता हूँ, आज से मैं किसी भी प्राणी को परेशान नहीं करूँगा। आप सच कहती थी कि भगवान सब कुछ देखता है।''

माँ बहुत प्रसन्न थी, देर से ही सही अंतत: मनु को अपनी भूल का अनुभव हो गया था।

- मिर्जापुर (उ. प्र.)

कविता

विद्यालय की पतलून

– शादाब आलम

ऊँची–ऊँची, तंग–तंग सी,
है विद्यालय की पतलून।

जोड़ लगे हैं इसमें चार
अम्मा कहती हैं हर बार
चिन्ता मत कर मेरे लाल
नई सिला दूँगी इस साल।
खुद पे काबू हो जाता,
पर इच्छाओं को कहाँ सुकून ?

कुछ साथी तो बड़े अजीब
मुझे चिढ़ाते, कहें गरीब
मगर नहीं हूँ मैं कमजोर
हँसके कर देता 'इग्नोर'
ऐसी–वैसी बातों से मैं,
क्यों खौलाऊँ अपना खून ?

एक रोज यह थी ना साफ
किया नहीं शिक्षक ने माफ
कहा, 'सुनो यह है स्कूल
घर के कपड़े नहीं कबूल।
क्या करता मैं ? लौट गया फिर,
सुनकर शाला का कानून।

–लखनऊ (उ. प्र.)

प्यार का चाबुक

– संजीव जायसवाल 'संजय'

बंटी बंदर बहुत समझदार था। एक बार वह घूमते–घूमते शहर पहुँच गया। वहाँ सर्कस वालों ने धोखे से उसे पकड़ लिया।

उस सर्कस का स्वामी बहुत दुष्ट था। वह किसी जानवर को पेटभर भोजन नहीं देता था। ऊपर से रिंग मास्टर हंटर मार–मारकर सभी को अपने इशारों पर नचाता रहता। जंगल के राजा शेर को आग के गोले से कूदना पड़ता। भालू को ऊँचे रस्से पर चलना पड़ता। हाथी को उसके आदेश पर सामान ला–लाकर देना पड़ता।

एक दिन सर्कस के स्वामी के पास कुछ शिकारी आये। वे सब जंगल में शिकार करने और ढेर सारे जानवरों को पकड़ने की योजना बना रहे थे। बंटी ने उनकी बातें सुनीं तो उसी रात सर्कस से भाग निकला।

उसने जंगल में सभी जानवरों को जमा किया और फिर बोला– ''भाइयो! सावधान हो जाइए। बहुत जल्दी आदमी जंगल पर धावा बोलने वाले हैं। वे आप में से बहुतों को मार डालेंगे और बहुतों को पकड़ ले जाएँगे।''

''ये आदमी होता कैसा है?'' शेर ने घबराए स्वर में पूछा।

''वह दो पैरों से चलता है और दो हाथों से बड़े–बड़े काम करता है।'' बंटी ने बताया।

''वह देखने में कैसा है?'' शेर ने दूसरा प्रश्न किया।

''लगभग–लगभग हम बंदरों जैसा ही दिखता है किन्तु उसके पूँछ नहीं होती।

''क्या वह बहुत लंबा–चौड़ा है?'' हाथी दादा ने जानना चाहा।

''नहीं!'' बंटी ने सिर हिलाया फिर बोला– ''वह हम बंदरों से थोड़ा लंबा होता है, किन्तु बहुत ही बुद्धिमान और खतरनाक होता है।''

''हा... हा...हा... फिर तो वह लंगूरी बंदर या उसका बड़ा भाई होगा। तभी तुम उससे इतना डर गये।'' शेर ठहाका मारकर हँसा फिर बोला– ''घबराओ मत! मैं कस कर दहाड़ मार दूँगा तो सारे आदमी दुम दबाकर भाग जाएँगे।''

''और मैं फूँक मार दूँगा तो वे सब उड़ जाएँगे।'' हाथी ने भी शेखी बघारी।

बंटी ने काफी समझाया किन्तु कोई भी छोटे से आदमियों से डरने को तैयार नहीं हुआ। फिर वही हुआ जिसका भय था।

धांय... धांय... धांय... दो दिन बाद ही शिकारियों की बंदूकों ने पूरे जंगल में कहर बरपा दिया। कई जानवर उनकी गोलियों के शिकार हो गये।

जंगल का राजा शेर लोहे के पिंजरे में फँस गया। हाथी उसे बचाने दौड़ा तो शिकारियों के खोदे गढ्ढे में गिर गया। उसे लोहे की मोटी–मोटी जंजीरों से बाँध दिया गया। भालू भी मोटे जाल में फँस गया।

पूरे जंगल में हाहाकार मच गया। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। बँटी ने जितना बताया था आदमी तो उससे भी अधिक खतरनाक निकले। उनकी बंदूकों का सामना करने की किसी में भी हिम्मत नहीं बची थी।

बंटी जानता था कि पकड़े गये जानवरों पर शहर में बहुत अत्याचार किये जाएँगे। कुछ सोचकर

उसने दूसरे बंदरों को जमा किया फिर अपनी योजना समझाने लगा।

शिकारियों ने जंगल में ही अपना कैम्प लगा लिया था। वहीं पर पकड़े ये जानवर बंद थे। उन्हीं के सामने अलाव जलाकर मारे गये हिरणों को भूना जा रहा था। सारे शिकारी बहुत प्रसन्न थे किन्तु पकड़े गए जानवर पछता रहे थे। अगर उन्होंने बंटी की बात मान सावधानी रखी होती तो आज यह स्थिति न होती।

बंटी और उसके साथी पेड़ों पर छुपकर बैठ गए। जब शिकारी खाना–खाने बैठे तो उन्होंने अपनी बंदूकें रख दीं। केवल एक शिकारी पहरे पर रहा। वह सावधानीपूर्वक चारों ओर चक्कर काट रहा था। अवसर देखकर सारे बंदर दबे पाँव नीचे उतरे। कुछ बंदरों ने उनकी गाड़ियों की हवा निकाल दी और बाकी उनकी बंदूकें उठाकर पेड़ पर चढ़ गये। रात के अंधेरे में कोई उनकी हरकतों को देख नहीं पाया।

थोड़ी देर बाद पहरेदार उस पेड़ के नीचे से निकला जिस पर बंटी बैठा हुआ था। उसके संकेत पर दो बंदर पहरेदार के ऊपर कूद पड़े। वह घबरा गया और बंदूक उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गई। बंटी को इसी अवसर की तलाश थी। उसने छलांग मारी और पलक झपकते ही उसकी बंदूक उठाकर पेड़ पर जा बैठा।

पहरेदार की चीख सुन शिकारियों ने पीछे देखा तो उनके होश उड़ गये। सारे बंदर उनकी बंदूकें लिए पेड़ पर बैठे थे।

''अरे, बंदूकें नीचे फेंक।'' सर्कस स्वामी ने डपटा।

''खें... खें... खें...'' सारे बंदर दाँत निकाल कर हँस दिए।

''ये जंगली बंदर बहुत बदमाश होते हैं। मार खाये बिना नहीं सुधरेंगे।'' रिंग मास्टर ने कहा और जमीन पर पड़े पत्थरों को उठा–उठाकर मारने लगा।

दूसरे शिकारी भी यही करने लगे। अब तो बंदरों की हालत खराब हो गई। भारी बंदूकों के कारण वे एक शाखा से दूसरी शाखा पर कूद नहीं पा रहे थे और बंदूकें वे छोड़ना नहीं चाहते थे। इसके चलते कई बंदर पत्थरों से घायल हो गये।

बंटी को लगा कि यदि जल्दी कुछ नहीं किया तो बाजी उलट सकती है। उसने सर्कस में निशाने बाज को बंदूक चलाते देखा था। उसकी नकल करते हुए उसने ट्रिगर दबा दिया।

धांय... बंदूक से गोली निकली। इसी के साथ तेज झटका लगा, बंटी अपने को संभाल नहीं पाया और वह धम्म से नीचे आ गिरा। बंदूक उसके हाथ से छूट गयी।

सर्कस स्वामी बंदूक उठाने लपका पर बंटी उससे अधिक फुर्तीला निकला। उसने झट से बंदूक उठाकर उसकी गर्दन से लगा दी।

''अरे! दग जाएगी।'' सर्कस का स्वामी चिल्ला उठा।

''खें... खें... खें... हाथ ऊपर उठा।'' बंटी ने अपने दाँत चमकाते हुए आदेश दिया।

सर्कस का स्वामी बंदर की भाषा नहीं समझ पाया किन्तु घबराहट के कारण उसके हाथ अपने आप ऊपर उठ गये।

बाकी बंदर भी समझ गए कि आदमी बंदूक से डरता है। उन सबने भी नीचे उतरकर अपनी–अपनी बंदूकें शिकारियों पर तान दी। जैसे–जैसे वे अपनी बंदूकें हिलाते शिकारियों की सांस ऊपर–नीचे होने लगती। कौन जाने कब कौन बंदर ट्रिगर दबा दे। कुछ शिकारियों ने जीप पर बैठकर भागने का प्रयत्न किया किन्तु उनके पहियों की हवा निकली हुई थी।

बंटी सर्कस के स्वामी को धमकाते हुए उस पिंजरे की ओर ले गया जिसमें शेर बंद था। निकट पहुँचकर उसने आदेश दिया– ''खें... खें... खें... पिंजरा खोल।''

सर्कस के स्वामी को उसका आशय समझ आ

गया था। किन्तु उसकी पिंजरा खोलने की हिम्मत नहीं हो रही थी। जानता था कि शेर बाहर निकला तो उसे खा जाएगा। देरी होते देख एक बंदर की खोपड़ी घूम गई। उसने बंदूक का ट्रिगर दबा दिया।

''धांय!'' सनसनाती हुई गोली सर्कस के स्वामी की कनपटी को छूती हुई निकल गई। मरता क्या न करता। उसे पिंजरा खोलना पड़ा। गुस्से से दहाड़ता हुआ शेर बाहर निकला और उसे दबोच लिया।

''नहीं महाराज! हम लोग इंसानों की तरह हिंसा का रास्ता नहीं अपनाएँगे। आप इसे छोड़ दीजिए।'' बंटी ने प्रार्थना की।

शेर उसे छोड़ना नहीं चाहता था लेकिन बंटी ने उसकी जान बताई थी। इसलिए उसकी बात टाल न सका। बंटी ने एक-एक करके सभी जानवरों को बंधन मुक्त करवा दिया। वे सब शिकारियों को घेर कर खड़े हो गये।

''इनमें से रिंग मास्टर कौन है जो हंटर मार-मारकर जानवरों को नचाता है?'' हाथी दादा ने चिंघाड़ते हुए कहा।

''क्या करिएगा जानकर?'' बंटी ने पूछा।

''मैं उसकी टाँगें चीर दूँगा ताकि वह पुन: किसी जानवर पर अत्याचार न कर सके।'' हाथी दादा गुस्से से बोले।

''इन आदमियों ने बहुत से जानवरों को मारा है। हम इन सबको मार डालेंगे। अपना प्रतिशोध लेंगे।'' कई और जानवर गुस्से से चिल्लाने लगे।

''भाइयो! यदि हमने इन इंसानों को मार दिया तो इनकी कहानी यहीं समाप्त हो जायेगी। उधर दूसरे इंसान जानवरों पर अत्याचार करते रहेंगे। इसलिए मारने की अपेक्षा हमें बहुत विचार कर निर्णय लेना चाहिए।'' बंटी ने समझाया।

''इन्होंने हमारे जंगल में बहुत उत्पात मचाया है। हम इन्हें दंड दिये बिना यहाँ से नहीं जाने देंगे।'' शेर ने गुर्राते हुए निर्णय सुनाया।

''ठीक है महाराज! किन्तु यदि इन्हें मारना ही है तो फिर प्यार के चाबुक से मारिए।'' बंटी ने सलाह दी।

''क्या अर्थ है तुम्हारा?''

''अर्थ बहुत सीधा है।'' बंटी ने आँख बंद कर कुछ विचार किया फिर बोला- ''यदि हम लोग इन्हें मारते-पीटते हैं तो थोड़े दिनों में इनके घाव भर जाएँगे और फिर यह सब कुछ भूल जाएँगे। किन्तु यदि हम इन्हें इनकी गाड़ियों में बैठाकर जंगल के बाहर छोड़ आएँ तो इनका मन जीवन भर अपनी करनी पर पछतावा रहेगा। उसके बाद ये लोग न तो फिर कभी किसी जानवर पर अत्याचार करेंगे और न ही दूसरों को करने देंगे।''

शेर समझ गया कि हिंसा का उत्तर हिंसा से देना अच्छा नहीं होता। उसने भी अपने बचपन में कहानी सुन रखी थी कि मारने वाले से बचाने वाला अधिक श्रेष्ठ होता है। अत: उसने सभी जानवरों को समझा-बुझाकर शांत कर दिया। हाथी दादा और भालू ने सभी शिकारियों को पकड़कर उनकी जीपों पर लादा फिर सारे जानवर उनको धक्का लगाते हुए जंगल के बाहर छोड़ आए।

शिकारी जानवरों की भाषा तो नहीं समझ पाए पर उनके व्यवहार को समझ गये थे। जिन जानवरों पर उन लोगों ने अत्याचार किया था उन्होंने उन पर दया दिखलाई थी। वे सब अब अपनी करनी पर पछता रहे थे। उन्होंने जानवरों पर कभी अत्याचार न करने का प्रण कर लिया था। सर्कस के स्वामी ने भी शहर पहुँचते ही सभी जानवरों को वापस जंगल में छोड़ दिया।

जो काम शेर की दहाड़ और हाथी की चिंघाड़ से नहीं हो सकता था वह प्यार के चाबुक से हो गया था।

- लखनऊ (उ. प्र.)

दो दो उपहार!

चित्रकथा – देवांशु वत्स

गोलू पढ़ेगा

– महावीर रवांल्टा

पात्र

विशुला	–	दादी
लता	–	बुआ
रोशन	–	पिता
रजनी	–	माँ
निखिल	–	बेटा
मानसी	–	बेटी
गोलू	–	गाँव का बालक

प्रथम दृश्य

(रोशन का घर। दोपहर का समय। बरांडे में एक बड़े से तख्त पर एक ओर लता बैठी है। दूसरी ओर निखिल व मानसी बैठे हैं। लता के बराबर में उसका थैला रखा है जिसे देखकर लगता है कि उसका अभी–अभी आना हुआ है।)

लता– (थैला खोलकर उसमें से लड्डू निकालकर निखिल को देती हुई।) ले, खा ले। तुम्हारे मामा ने विशेषकर तुम्हारे लिए ही भेजे हैं। ले, मानसी तू कहाँ है? (इधर–उधर देखकर) अरी! आ न!

मानसी– (धीमे स्वर में) अरी बुआ! मैं तो यहीं बैठी हूँ तुम्हारे पीछे।

लता– तो सामने आ न! ले तू भी खा फिर बाद में शिकायत न करना कि बुआ ने कुछ नहीं खिलाया। (निखिल से) ले, एक और ले। (निखिल आगे बढ़कर लड्डू ले लेता है।)

(थैले से चॉकलेट निकालकर) लो, दोनों एक–एक चॉकलेट भी ले लो।

(दोनों चॉकलेट ले लेते हैं।)

बस अब तुम्हारी छुट्टी। बाकी तुम्हारे माता–पिता के आने के बाद। (स्मरण कर) और तुम्हारी दादी? कहाँ रह गईं! (पुकार कर) माँ! समय पर इधर–उधर चली जाएगी फिर बाद में कहेगी कि मुझे

कुछ नहीं मिला। ससुराल से एक टॉफी भी लेकर नहीं आती। माँ! माँ!!

निखिल– (बीच में ही) अरी बुआ! वह तो तुम्हारे लिए चाय बनाने गई हैं।

लता– अच्छा! तुम्हारे माता–पिता कहाँ गए?

निखिल– वे तो सुबह ही खेत पर चले गए थे।

लता– अच्छा!

(विशुला का एक ट्रे में चाय का ग्लास लेकर आना।)

विशुला– (लता की ओर चाय का ग्लास बढ़ाती हुई।) ले चाय पी ले (मानसी से) जा, रसोई में नाश्ते की प्लेट रखी है उठा ला।

मानसी– अच्छा दादी!

निखिल– (बीच में ही) नहीं दादी! मैं लेकर आऊँगा।

मानसी– नहीं मैं लेकर आऊँगी।

निखिल– नहीं मैं....

(दोनों आगे बढ़ने को होते हैं लेकिन मैं–मैं

करते हुए एक-दूसरे को रोक लेते हैं।)

लता- (डाँटने के अंदाज में) अब लड़ना-झगड़ना बंद करो। मानसी! तुम मेरे लिए एक ग्लास पानी लेकर आओ और निखिल तुम नाश्ते की प्लेट उठा लाओ।

निखिल- हाँ बुआ, नाश्ते की प्लेट मैं लेकर आऊँगा, ले.. (मानसी की ओर अँगूठा दिखाकर उसे चिढ़ाता है लेकिन वह अपना मुँह बनाकर उसका उत्तर देती है)

मानसी- (पानी का ग्लास लाकर) लो बुआ जी!

निखिल- (नाश्ते की प्लेट सामने रखकर) लो बुआ जी! नाश्ता।

लता- बहुत अच्छे, अब दोनों हमारे साथ बैठकर चाय नाश्ता करो। (सभी चाय पीने के साथ ही प्लेट में रखी नमकीन व बिस्कुट भी खाने लगते हैं)।

(विशुला से) माँ! भैया-भाभी कब तक आएँगे? मुझे तो आज ही वापस जाना था।

विशुला- दोपहर तक आ जाएँगे लेकिन तुझे लौटने की इतनी जल्दी क्या है? अभी तो आ रही है। कल सबेरे चले जाना।

लता- नहीं माँ! घर पर ढ़ेर सारे काम पड़े हैं। सूरज व निशा की देखरेख भी करनी पड़ती है। विद्यालय से घर पहुँचते ही सारा घर सिर पर उठा लेते हैं।

विशुला- घर में सास व जेठानी तो हैं, आज के दिन वे संभाल लेंगी।

लता- वे तो देख ही लेती हैं लेकिन उनसे बच्चे जरा भी नहीं डरते। हाँ, अपने पिताजी के आने पर अवश्य भीगी बिल्ली बन जाते हैं।

विशुला- आज के दिन रुक ही जा, सबेरे चली जाना। बहुत दिनों बाद तो तेरा आना हुआ। रोशन और बहू भी आ जाएँगे। उनसे भी तसल्ली से बातचीत हो जाएगी।

लता- (असमंजस की सी स्थिति में) रुक तो जाती लेकिन घर की चिन्ता...।

विशुला- (बीच में ही टोककर अब घर की चिंता छोड़ और यहीं रुक जा। तुझे भूख लग रही होगी। मैं रोटी बना देती हूँ।

लता- खा लूँगी, अभी भूख नहीं है। वैसे भी घर से खाकर चली हूँ।

विशुला- अच्छा, तो तू बैठ! मैं बछिया और बैलों को घास-पानी देकर आती हूँ।

लता- बछिया?

विशुला- हाँ, दो बछिया हैं और एक जोड़ी बैल। इन्हें जंगल नहीं भेजते, बछिया छोटी है और बैल 'खूंटिया' इसलिए घर पर ही घास-पानी का प्रबंध करना पड़ता है।

लता- तो फिर जा।

(विशुला चली जाती है। लता वहीं बैठ जाती है। निखिल व मानसी उसके साथ ही बैठ जाते हैं। लता लड्डू का डिब्बा खोलकर उन्हें एक-एक लड्डू देती है तथा एक स्वयं खा लेती है। इसी बीच गोलू आता है, उन्हें लड्डू खाते देख वह एक ओर खड़ा हो जाता है।)

(गोलू की ओर देखकर) अरे, कौन है तू? इधर क्यों आया? ऐसे टुकूर-टुकूर क्या देख रहा है? चल भाग यहाँ से।

(गोलू भागने लगता है।)

निखिल- (लता से) अरी बुआ, यह तो गोलू है। (आवाज देकर) अरे गोलू! गोलू! रुक जा।

(गोलू पीछे मुड़कर नहीं देखता।)

लता- (निखिल से) अरे, यह गोलू कौन है?

निखिल- यहीं पानी के पास है उसका घर उसकी माँ भी नहीं है।

लता- अरे! अतरू का बेटा तो नहीं है? तुम्हें मुझे पहले बताना चाहिए था।

निखिल- कब बताता? तब तक तो वह जा चुका था। मैंने आवाज भी तो दी थी।

लता– ओह, बेचारा! बहुत बुरा हुआ।

विशुला– (आकर) क्या बुरा हुआ?

निखिल– दादी! गोलू आया था लेकिन बुआ ने उसे डाँटा तो वह वापस भाग गया।

विशुला– अरे! क्यों भगाया बेचारे को? एकाध लड्डू उसे भी पकड़ा देती। जन्म से गूंगा है बेचारा, ऊपर से माँ छोड़कर चली गई। बाप आवारा व शराबी निकला। पीकर कहीं भी पड़ा रहता है। इसे जहाँ तन को कपड़ा और पेट को रोटी मिल जाती है वहीं रह लेता है, कभी चाचा तो कभी ताऊ के घर। सच कहते हैं अपनी माँ नहीं रहती तब बच्चे दर–दर की ठोकर खाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। ईश्वर भी बड़ा ही निर्दयी निकला, भरी जवानी में उसकी माँ को उठा लिया। बेचारी जैसे–तैसे अपने बच्चे का लालन पालन कर रही थी। घास काटते समय पहाड़ी से पैर क्या फिसला कि जान ही गंवा बैठी।

लता– हाँ, माँ! मैंने भी देखा था उसे। अब यह बच्चा... बहुत दुःख हुआ। एक लड्डू उसे देने के बजाए मैंने उसे यूँ ही दुत्कार दिया ओह! (उसकी आँखें छलछला पड़ती हैं।)

(निखिल व मानसी से) अच्छा तुम दोनों कुछ देर अपनी पढ़ाई करो। मैं कुछ देर आराम करती हूँ फिर कौशल्या चाची को देखने जाऊँगी। सुना है वह बीमार चल रही हैं।

विशुला– अवश्य जाना। बड़े–बूढ़ों की सूचना लेते रहना चाहिए। उनका आशीष फलता–फूलता है। अपने मन को भी संतुष्टि मिलती है। बड़े–बूढ़ों को जीने के लिए कुछ संजीवनी मिल जाती है।

(निखिल व मानसी अपनी पुस्तकें लेकर पढ़ने लगते हैं। लता आराम की स्थिति में लेट जाती है जबकि विशुला बाहर की ओर जाती है।)

द्वितीय दृश्य

(रोशन का घर। सायं का समय। तख्त पर लता, रोशन व उसकी पत्नी रजनी साथ बैठे आपस में बातें कर रहे हैं। दूसरी ओर मानसी अपने खेल में लगी है। तभी निखिल दौड़ता हुआ आता है।)

निखिल– (आकर) बुआजी! बुआजी!

लता– (सामने देखकर) हाँ, बोल।

निखिल– आप अभी 'नहर' पर गई थीं?

लता– हाँ, लेकिन क्यों?

निखिल– (शरारत भरे अंदाज में) बस ऐसे ही।

लता– ऐसे ही के बच्चे, कुछ बात तो अवश्य है।

निखिल– बात यह है कि आपका मोबाईल कहाँ है?

(लता अपना पर्स व आसपास मोबाईल खोजने का प्रयास करती है लेकिन न मिलने पर निराश सी हो जाती है।)

लता– मैंने मोबाईल यहीं–कहीं तो रखा था लेकिन...

निखिल– लेकिन बुआ, मोबाईल तो आप नहर के किनारे पर ही भूल आई थीं।

लता– अरे हाँ! (माथे पर हाथ मारकर) मैंने वहाँ हाथ–मुँह धोकर पानी पिया था। उसी समय नहर के किनारे रखकर भूल गई।

निखिल– (जेब से मोबाईल निकालकर लता की ओर बढ़ाता हुआ।) लो, यह रहा आपका मोबाईल।

लता– लेकिन तुम्हें यह कैसे मिला?

निखिल– मुझे नहीं मिला, गोलू ने लाकर दिया। तुम पानी पीकर लौट रही थी उसी समय गोलू वहाँ पहुँचा। उसने मोबाईल देखा तो समझ गया कि अवश्य आपका ही होगा। फिर वह मोबाईल लेकर दौड़ता हुआ सीधे मेरे पास आया और संकेतों में बताने लगा कि यह तुम्हारी बुआ का है।

लता– (आश्चर्य से) हैं! इतना अच्छा बच्चा? गोलू सचमुच बहुत अच्छा बच्चा है। मैंने उसे बिना कारण दुत्कारा लेकिन उसने मेरा मोबाईल पाकर वापस मुझ तक पहुँचा दिया।

मुझसे जीवन में पहली बार सचमुच बहुत बड़ी

भूल हुई जो मैं एक भोले बच्चे को न पहचान सकी।

निखिल! तू मेरा एक काम करेगा?

निखिल– हाँ बुआ! बोलो।

लता– तू गोलू को बुला ला, कहना, मैं उससे मिलना चाहती हूँ।

निखिल– बिल्कुल नहीं बुआ! वह तुमसे डर गया है। अब वह नहीं आने वाला।

लता– देख, तू कैसे भी उसे बुला ला। वह तेरी बात मानता है (पुचकारते हुए) देख, तू तो मेरा समझदार भतीजा है एकदम जादू की छड़ी... कुछ भी कर सकता है।

निखिल– यह हुई न बात! जादू की छड़ी! चलो फिर जादू करता हूँ.... यूँ गया और यूँ आया।

(अदृश्य होने का सा अभिनय करता हुआ जाता है और गोलू को लेकर आता है।)

लता– (गोलू के समीप जाकर) अरे, तुम्हारा नाम गोलू है न? अरे वाह! कितना प्यारा नाम है। तू मुझसे दूर क्यों खड़ा है? मैंने तुझे डाँटा, इसलिए गुस्सा है? लो मैं कान पकड़कर क्षमा माँगती हूँ।

(लता अपने दोनों कान पकड़ लेती है। उसे देख गोलू उससे लिपट जाता है। सभी की आँखें नम हो जाती हैं।)

तू सचमुच बहुत सच्चा व अच्छा लड़का है। ले, पहले अपने हिस्से के लड्डू खा ले।

(डिब्बे से लड्डू निकालकर उसे खिलाती है। तभी मानसी एक ग्लास में चाय लेकर आती है।)

मानसी– (चाय का ग्लास गोलू की ओर बढ़ाती हुई।) गोलू भैया! चाय पी लो।

(गोलू चाय का ग्लास पकड़ता है तो बाल सुलभ हँसी उसके चेहरे पर उभरती है। वह चाय पीने लगता है। सभी का ध्यान इस समय उसी की ओर रहता है।)

लता– (गोलू के सिर पर हाथ फेरती हुई।) गोलू! तू विद्यालय में पढ़ना चाहता है?

(गोलू 'हाँ' की मुद्रा में गर्दन हिलाता है।)

तू पढ़ना चाहता है तो अवश्य पढ़ेगा। मैं कल ही निशा के पिता से जाकर बात करूँगी कि इसका प्रवेश विजया दिव्यांग विद्यालय में करने के लिए प्रयत्न करें।

वहाँ रहने खाने की सारी व्यवस्था नि:शुल्क है। वहाँ पर प्रवेश हो गया तो इसका भविष्य सँवर जाएगा।

निखिल– (आश्चर्य से) सच बुआ!

लता– हाँ।

मानसी– बुआ! गोलू पढ़ाई में भी बहुत अच्छा है केवल बोल नहीं पाता। गोलू बता (गोलू की ओर देखकर) अठारह नमे कितने हुए?

(कुछ पल विचार कर। गोलू इशारे से एक छ: दो यानि एक सौ बाँसठ बता देता है।)

(प्रसन्न होकर ताली बजाती हुई) देखा बुआ! गोलू कितना होशियार है।

लता– हाँ, सचमुच! मैं इसके प्रवेश के लिए भरपूर प्रयत्न करूँगी।

रोशन– प्रयत्न क्या? मानसी के मामा से बात छेड़ दोगी तो वे कोई कोर कसर नहीं छोड़ने वाले।

रजनी– हाँ लता! सचमुच प्रयत्न करना। गोलू का जीवन बन जाए तो इससे बड़ी प्रसन्नता हम सबके लिए और क्या हो सकती है।

विशुला– बिल्कुल बेटी! इसकी माँ की आत्मा भी तुम्हें आशीर्वाद देगी।

निखिल– (सामूहिक स्वर में) हाँ बुआ! अब गोलू अवश्य पढ़ेगा, क्यों गोलू?

(गोलू खिलखिलाकर हँसने लगता है, उसे हँसता देखकर सभी के चेहरों पर प्रसन्नता के भाव आ जाते हैं।

पार्श्व से–''पढ़–लिखकर मान बढ़ेगा, पूरी होगी आस; पढ़–लिखकर स्वाभिमान जगेगा, पूरा है विश्वास'' गीत गूँजता है। धीरे–धीरे मंच पर अँधेरा होता है फिर पर्दा गिरता है।)

– पुरोला,
(उत्तराखण्ड)

गुस्सा थूक दिया

– डॉ. संगीता बलवंत

रिक्की, विक्की दोनों जुड़वाँ भाई थे। एक साथ खेलते थे और बात–बात पर झगड़ते भी थे। इनकी बालसुलभ नोक–झोंक देख–सुनकर मन गुदगुदा जाता।

अरुणा दीदी इनकी पड़ोसी थी। अरुणा दीदी जब छत पर रहती और रिक्की, विक्की भी अपनी छत पर आते तो अरुणा दीदी उनकी शरारतें अपनी छत से अवश्य देखती थीं।

दोनों भाई कक्षा दो में पढ़ते थे। दोनों से बात करके मन बहुत प्रसन्न होता था पर इन दोनों में विक्की से बात करना और भी रोचक लगता था वह शब्दों को नासमझी में उलट–पुलट देता था जिसे सुनकर बहुत आनन्द आता।

एक दिन रिक्की, विक्की सर्दियों के मौसम में छत पर धूप में बैठकर सब्जी–रोटी खा रहे थे तभी अरुणा दीदी अपनी छत पर पहुँची– ''क्या खा रहे हो रिक्की–विक्की?'' अरुणा दीदी ने रिक्की–विक्की से पूछा।

''निनोना की सब्जी और रोटी खा रहा हूँ, दीदी।'' विक्की खाते हुए बोला।

''निनोना की सब्जी?'' भला यह कौन सी सब्जी होती है?'' अरुणा दीदी ने यह सोचते हुए विक्की से पूछा।

''यह निनोना क्या होता है विक्की? मैंने तो इसकी सब्जी कभी नहीं खाई। निनोना कैसा होता है? मैंने तो यह सब्जी अब तक देखी भी नहीं।''

रसोईघर में मेरी माँ ने निनोना रखा है। मैं अभी लाकर आपको दिखाता हूँ।'' अपना खाना समाप्त करते हुए विक्को बोला और दौड़कर छत से नीचे गया और फटाफट एक निनोना लेकर ऊपर आया और अरुणा दीदी को दिखाते हुए बोला– ''दीदी! यह देखो, ऐसा होता है, निनोना।''

''यह निनोना है?''

''हाँ यह निनोना है दीदी!''

''अरे बुद्धू! यह निनोना नहीं नेनुआ (गिलकी) है।'' अरुणा दीदी हँसते हुए बोली।

''हाँ दीदी! नेनुआ। सही बोली आप। माँ भी यही कहती हैं। मैं भी यही कहना चाह रहा था पर याद नहीं आ रहा था।''

ऐसे ही एक दिन गर्मी के मौसम में शाम को अरुणा दीदी अपनी छत पर बैठकर सब्जी काट रही थी तभी विक्की अपनी छत पर ग्लास में कुछ लेकर आया और छत पर बिछी चटाई पर बैठकर पीने लगा।

''क्या पी रहे हो विक्की?'' अरुणा दीदी विक्की को देखकर प्यार से बोली।

''माँ ने मुआयजा बनाया है वही पी रहा हूँ।''

''मुआयजा! अरुणा दीदी मुआयजा शब्द सुनते ही विक्की के शीशे के ग्लास की ओर देखा तो उसमें लाल रंग का पेय पदार्थ था और वह

रूहआफजा था। दीदी तुरन्त समझ गईं कि विक्की को रूहआफजा शब्द याद नहीं आ रहा है और वह रूहआफजा को मुआयजा बोल रहा है। अरुणा दीदी विक्की के रूहआफजा की जगह मुआयजा बोलने की बात अपने माँ–पिताजी को बताकर बहुत हँसी।

एक बार की बात तो अरुणा दीदी भूलती ही नहीं। विक्की छत पर बैठा पढ़ रहा था तभी रिक्की एक प्लेट में बिस्कुट लेकर आया। एक बिस्कुट स्वयं लिया और दूसरा बिस्कुट विक्की को दिया, तीसरा पुन: स्वयं लिया और चौथा बिस्कुट पुन: विक्की को दिया। प्लेट में पाँचवा बिस्कुट भी था।

''इसे तोड़ो और आधा–आधा ले लिया जाए।'' विक्की ने कहा– ''हाँ तोड़ रहा हूँ।'' कहते हुए रिक्की ने बिस्कुट को आधा–आधा तोड़ा। टूटे हुए बिस्कुट में एक बिस्कुट छोटा हो गया एक बड़ा। बड़ा वाला बिस्कुट रिक्की ने अपने लिए रख लिया और छोटा वाला विक्की को दिया।

''मैं छोटा वाला नहीं लूँगा बड़ा वाला दो।'' विक्की बोला।

''नीचे से बिस्कुट मैं लाया हूँ इसलिए बड़ा वाला मैं लूँगा।''

''ऐसी बात है तो सारे बिस्कुट प्लेट में तुम भी रखो मैं भी रखूँ और प्लेट लेकर मैं नीचे जाता हूँ फिर मैं प्लेट लेकर आऊँगा और बड़ा वाला बिस्कुट मैं ले लूँगा।''

''मैं ऊपर से नीचे लेकर जाऊँगा, उसका क्या होगा?''

''फिर कोई और उपाय सोचो।''

छत के कोने में दो गिलहरियाँ घूम रहीं थीं उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानों कुछ खाने के लिए ढूँढ रही हो। रिक्की को गिलहरियाँ भूखी लगीं।

''वह देखो दो गिलहरियाँ कुछ खाने को ढूँढ रहीं हैं। यह आधा–आधा वाला बिस्कुट उनको ही दे

देते हैं। बात समाप्त।'' रिक्की, विक्की को गिलहरियों की ओर संकेत करके दिखाता है और दोनों टूटे हुए बिस्कुट गिलहरियों की ओर फेंक देता है।

बिस्कुट फेंकते ही पहले तो दोनों गिलहरियाँ भाग खड़ी हुईं और कुछ देर बाद वापस आईं। एक टुकड़ा एक गिलहरी ने उठाया और दूसरा टुकड़ा दूसरी गिलहरी ने उठाया और कुछ दूरी पर जाकर बिस्कुट को कुतर-कुतर कर खाने लगीं।

इधर रिक्की-विक्की भी अपना बिस्कुट खाने लगे। अरुणा दीदी रिक्की-विक्की और गिलहरियों की हरकत देखकर फूले नहीं समा रही थीं।

एक दिन छत पर बैठकर अरुणा दीदी पत्रिका पढ़ने में खोई थी तभी रिक्की-विक्की दोनों भाइयों के झगड़ने की आवाज ने उसे उनकी ओर आकर्षित किया।

रिक्की-''मेरी गेंद तुमने नीचे फेंक दी है। जाओ लाकर दो मुझे।''

''तुमने मारा क्यों मुझे ? अब मैं नहीं जाऊँगा गेंद लाने।'' विक्की गेंद लाने से मना करते हुए बोला।

''क्यों नहीं जाओगे। तुमने फेंकी है तो तुम्हीं जाओगे।''

''मैंने गेंद फेंकी तो तुमने मुझे मार दिया। बात बराबर हो गई। अब मैं क्यों जाऊँ गेंद लेने। नहीं मारते तो जाता।''

तभी छत पर रिक्की-विक्की की माँ आ गई। ''क्यों झगड़ रहे हो बेटा ? गुस्सा थूक दो बात-बात पर झगड़ा नहीं करते है।''

माँ ने गुस्सा थूकने की बात कहते ही विक्की 'थू' करके थूक दिया।

''जाओ जाकर मेरी गेंद नीचे से ला दो वर्ना माँ को बताऊँगा कि तुमने जानबूझकर मेरी गेंद नीचे फेंकी हैं। फिर माँ भी तुम्हें मारेगी।'' रिक्की विक्की से बोला।

''अब क्यों झगड़ते हो गुस्सा तो हमने थूक दिया है।'' विक्की बोला।

''गुस्सा तुमने थूका है मैंने नहीं।''

''गुस्सा थूक दिया तो क्या हुआ। तुम जानबूझकर गेंद फेंकने की बात बताओगे तो मैं भी माँ को बताऊँगा कि तुमने मुझे जोर से मारा है।''

''अब तुम कोई शिकायत नहीं कर सकते क्योंकि तुमने गुस्सा थूक दिया है। गुस्सा थूकने के बाद झगड़ा और शिकायत नहीं करते। चाहो तो यह बात माँ से पूछ सकते हो।'' छत के एक कोने में गेंहूँ बीनती माँ की ओर संकेत करते हुए रिक्की बोला।

''ऐसी बात है तो मैं अपना थूका हुआ गुस्सा वापस ले लूँगा।''

''कैसे वापस ले सकते हा ? वह तो सूख गया है और नहीं भी सूखा होता तो क्या वापस लेने में तुम्हें घिन्न नहीं आती ?'' विक्की को उसके सूखे हुए थूक की ओर दिखाते हुए रिक्की बोला।

विक्की सोचने लगा अब तो वह थूका हुआ गुस्सा वापस नहीं ले सकता और माँ से रिक्की के मारने की बात बताऊँगा तो रिक्की भी मेरे जानबूझकर गेंद फेंकने की बात बता देगा तो कहीं माँ मुझे ही न मारने लगे क्योंकि गलती तो पहले मैंने ही की है।

ऐसा सोचकर विक्की गेंद लेने नीचे जाता है और गेंद ले आता है और फिर कब दोनों एक साथ खेलने लगे पता ही नहीं चला। अरुणा दीदी ने अनुभव किया कि सचमुच दोनों ने गुस्सा थूक दिया है।

- जमानियां (उ. प्र.)

ग्रेनेडियर योगेन्द्रसिंह यादव

२७ दिसम्बर १९९६ को जब वे सेना की १८ ग्रेनेडियर बटालियन के सैनिक बने उनकी आयु मात्र सोलह वर्ष की थी। जन्म हुआ था उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के औरंगाबाद अहीर नामक ग्राम में।

कारगिल की प्रसिद्ध लड़ाई १९९९ में मई से जुलाई तक चली। इसमें टाइगर हिल एक बड़ा कठिन और महत्वपूर्ण मोर्चा था। कमांडिंग ऑफिसर कर्नल कुशल ठाकुर के नेतृत्व में २ जुलाई को १८ ग्रेनेडियर को टाइगर हिल पर अपना झण्डा गाड़ने का आदेश हो चुका था। २५ जाँबाज सैनिकों का दल अपने लक्ष्य की ओर चल पड़ा। उन्हें १७५०० फुट की खड़ी बर्फीली चढ़ाई करना थी। योगेन्द्र सिंह यादव ने यह जिम्मेदारी ली पर आधी चढ़ाई पर ही शत्रु के बंकर से मशीनगनें गोलियाँ उगलने लगी। रॉकेट लाँचर भी सक्रिय थे और रॉकेट के वार से प्लाटून कमाण्डर और उनके दो साथी बलिदान हो गए।

योगेन्द्र यादव को एक गोली काँधे और दूसरी जाँघ व तीसरी पेट के पास आकर लगी मगर यह रणबाँकुरा थमा नहीं। अन्तत: ऊपर पहुँच ही गए और रेंगते हुए शत्रु के एक बँकर पर ग्रेनेड फेंककर चार शत्रु सैनिक ढेर कर दिए। फिर दूसरे बँकर पर भी इनके हाथों ग्रेनेड चला और तीन वहाँ भी ढेर हुए आमने-सामने की लड़ाई में इनके बाएँ हाथ की हड्डी टूट गई। लेकिन यह वीर रुका नहीं इस घायल अवस्था में ही उन्होंने अपनी ए. के. ४७ से १५-२० शत्रुओं की जीवन लीला समाप्त कर दी और दूसरी चौकी पर भी अधिकार कर लिया।

इसके बाद बाकी घुसपैठियों को मार गिराते हुए तीसरी चौकी पर कब्जा जमाया और टाईगर हिल पर तिरंगा लहरा दिया उन्हें इस अप्रतिम वीरता के लिए कृतज्ञ राष्ट्र ने **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया।

उलझ गए!

मोहन की ओर संकेत करते हुए राधा श्याम से कहती है- ''मैं उसके दादा के इकलौते बेटे की बेटी हूँ।'' मोहन और राधा आपस में क्या होंगे?

उलझ गए! का उत्तर- मोहन और राधा आपस में भाई बहन हैं।

अनूठी हैं मछलियां

सचित्र प्रस्तुति- **संकेत गोस्वामी**

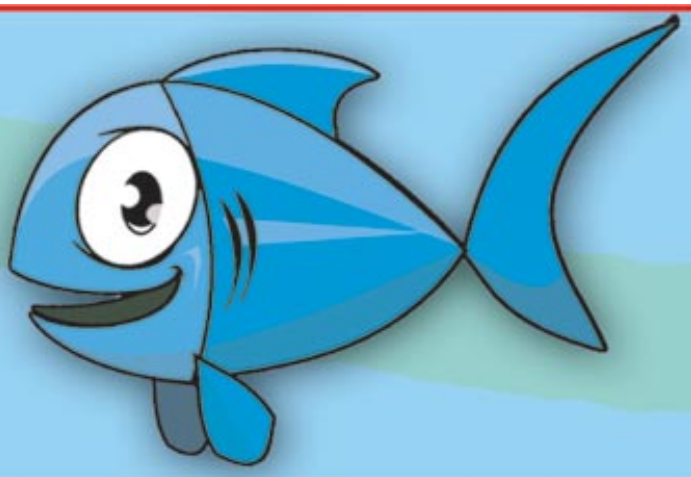

मछलियां जंतुओं का वह समूह है जिसने स्वयं को पानी में जीने के अनुकूल बना लिया। वे आमतौर पर शल्कों, कवचों जैसी सख्त पपड़ी से बनी होती हैं। ये कवच उनके शरीर की रक्षा करते हैं। मछलियां पानी में घुली ऑक्सीजन लेती हैं और अपने गिल्स से उसे निकालती हैं।

एक मछली में होता क्या है?

सामान्यतः मछली की संरचना देखने पर लगता है कि मछली के लगभग सभी जरूरी हिस्से उसके शरीर में आगे की ओर निचोड़े हुए से होते हैं। उसका पिछला हिस्सा शक्तिशाली मांसपेशियों का होता है जो तैरने के काम आती है।

मछली के अंदर मौजूद स्वीम ब्लडर एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है, जो मछली को किसी भी गहराई तक डुबकी लगाने में मदद करता है।

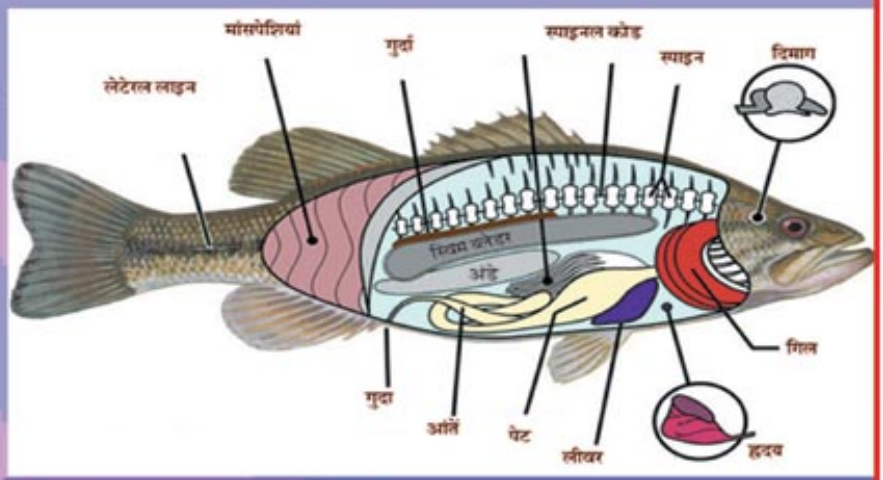

शार्क मछली पानी की सबसे बड़ी, डरावनी, हिंसक परभक्षी है. इसकी शुरुआती प्रजातियां अविकसित थीं. इसके शरीर को कड़ी लचीली हड्डियों का बड़ा सहारा होता है. शार्क मछलियां, सीलों और अन्य समुद्री जंतुओं को खाती हैं. शार्क मछली के अन्य मछलियों की तरह स्वीम ब्लेडर नहीं होता, उसे लगातार तैरना पड़ता है अगर वह तैरना बंद कर दे तो भारी पत्थर की तरह तल में जा गिरेगी.

हजारों अलग-अलग तरह की मछलियां छिछले और मूंगे युक्त पानी में रहा करती हैं। मछलियां ढ़ेरों रंगवाली, धारियों वाली, धब्बों वाली होती हैं। उनके ऊपरी रंग, समुद्री पौधों के बीच उनका विचरण और पानी के अंदरूनी वातावरण के बीच उन्हें शिकार बनाना शिकारी के लिए बड़ा मुश्किल होता है।

ऊँची उड़ान

– डॉ. राकेश 'चक्र'

तिलक आठवीं कक्षा में पढ़ रहा था। अच्छे अंक लाना भी उसका जुनून था। उसके पिता चूँकि योग से जुड़े हुए थे, इसलिए वह भी भोर में जगकर एक–दो गिलास गर्म पानी पीकर नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर बीस मिनट योगादि करता। सदैव ही वह नई स्फूर्ति और उत्साह से भरा रहता। बाद में वह मन लगाकर अपनी पढ़ाई करता। स्वामी विवेकानंद की तरह उसकी भी बुद्धि प्रखर व कुशाग्र थी, वह जो भी पढ़ता, जल्दी याद हो जाता। शायद ही उसे कभी उसके माता–पिता ने पढ़ाई और खाना आदि खाने के लिए डाँट–डपट की हो। जोर घर में माँ ने बनाया, वह ही सहज रूप से खा लिया। जैसे वर्तमान में अधिकांश माता–पिता अपने बच्चों से पढ़ने–पढ़ने की रट लगाए रहते हैं और बच्चे सुनकर नहीं देते हैं।

परिवार में तनाव और नकारात्मक ऊर्जा से घर का वातावरण रसहीन हो जाता है। साथ ही खाना खाने व दूध आदि पीने के लिए भी बच्चों से घर वाले मिन्नतें कर बच्चों की आदतें बिगाड़कर जिद्दी बनाने का काम कर रहे हैं।

वह मुंबई में रहता था, पिता उसके एक कंपनी में कार्यरत थे। माँ गृहणी थीं, लेकिन अन्य गृहिणियों की तरह न थीं, घर के सभी काम स्वयं ही मुस्कराते हुए करतीं, जबकि धन का अभाव भी न था। टी. वी. और एंड्रॉयड मोबाईल फोन घर में उनके पास था, लेकिन प्रयोग बहुत ही संतुलित। तिलक पर इस बात का बहुत प्रभाव पड़ा, वह भी टी. वी. और मोबाईल से दूरी बनाए रखता, लेकिन रविवार को या छुट्टी वाले दिन अपनी छोटी बहन और अपनी माँ के साथ मनोरंजन और ज्ञान में वृद्धि के लिए थोड़ा प्रयोग कर लेता।

उसे पूर्ण विश्वास व आभास था कि पढ़ाई और खेल ही जीवन के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं, उसे अपने विज्ञान के शिक्षक गुप्ता जी की बात भी सदा याद रहती कि समय बहुत कीमती होता है, जो दोबारा वापस लौटकर नहीं आता, इसलिए वह समय का सही उपयोग करना पूरी तरह सीख गया था।

तिलक की माँ अपनी सेहत के साथ–साथ सबका ही बहुत ध्यान रखतीं। सुबह का योग और शाम का भ्रमण उनकी दिनचर्या में शामिल था।

घर का वातावरण शांत और सुरुचिपूर्ण था। उसके पिता अपने कार्यालय से अक्सर ही देर से थके–मांदे वापस लौटते। कार्यालय में व्यस्तता कुछ अधिक ही थी।

तिलक को कुछ किताबों की आवश्यकता पड़ी, जो उसके घर से काफी दूरी पर मिल सकतीं थीं। जो बहुत ही भीड़-भाड़ वाले बाजार से मँगानी थीं। काफी दूर होने के कारण वह अकेला जाने से हिचक रहा था। वह अपने पिता से ही किताबें मँगाना चाहता था। लेकिन उसके पिता इतने थके हुए कम्पनी से लौटते कि उसकी हिम्मत उनसे कहने की न पड़ती। इसलिए उसने सोचा कि क्यों न किताबें कोरियर से मँगा ली जाएँ। उसने घर के पास ही कोरियर कंपनी में जाकर पूछा, तब कोरियर कम्पनी के मैनेजर ने तीन किताबें मँगाने के तीन सौ रुपया बताए, जो उसे बहुत अधिक लगे तथा वह सोचने लगा कि इतने रुपये में तो बहुत अधिक किताबें आ जाएँगी।

तिलक को अपने कोर्स की तीन किताबों की बहुत आवश्यकता थी। वह जब अपने विद्यालय से लौटा, तब उसके मन में यह विचार आया कि इस महानगर में मेरे जैसे कितने ही धन के अभाव में किस तरह छोटी-मोटी वस्तुओं को कोरियर से भेजते और मँगाते होंगे। कई बार तो सामान से अधिक कोरियर के पैसा बहुत अधिक होते हैं, जैसे कि मेरी किताबों के। मेरे पिताजी की आय भी सामान्य है, मेरे अकेले जाने में जोखिम भी है, पिताजी बेचारे थके-हारे कंपनी से आते हैं। उसने संकोचवश अपने पिताजी को अपनी बात साझा नहीं की, लेकिन उसने पड़ोस में रह रहे काकाजी से यह बात सहज रूप से साझा की, क्योंकि अधिकांश ही वह सुबोध काका से मिलता-जुलता रहता था, जो उसके पिताजी के घनिष्ठ मित्र थे। वह तिलक को बहुत प्यार करते थे। वे किसी निजि बैंक में कार्यरत थे।

तिलक उनके घर गया। उन्हें चरणस्पर्श कर प्रणाम किया। तिलक ने कहा- ''काका! मैं आपसे अपनी एक योजना साझा करना चाहता हूँ।''

''हाँ-हाँ बेटा अवश्य करो। मुझे प्रसन्नता होगी।''

तिलक ने कहा- ''मुझे तीन किताबें सोहन मार्केट से मँगानी थीं, लेकिन कोरियर वाले किताबों के मूल्य से अधिक कोरियर के पार्सल का पैसा माँग रहे हैं। क्यों न काका एक ऐसी कोरियर कंपनी बनाई जाए, जो कम मूल्य में दिन के दिन मुंबई शहर में पार्सल ला दे और पहुँचा दे। मुंबई में सैकड़ों की संख्या में घर-घर भोजन पहुँचाने वाले डिब्बावाले भाई लोग मुंबई की लाइफलाइन कहे जाते हैं, क्यों न हम इनकी सहायता से पार्सल आसानी से भेज और मँगा सकते हैं। एक तरफ इनकी आय भी बढ़ेगी और दूसरे पार्सल कम कीमत में ही उसी दिन गंतव्य तक पहुँच जाएगा।''

''वाह! बेटा तुम्हारी योजना बहुत अच्छी है। मैं

आज रात में ही अच्छी प्रकार विचार-विमर्श करूँगा। कल तुम्हें अपना निर्णय बताऊँगा। तुम कल शाम को बेटा मिलना।''

विनम्रता पूर्वक तिलक ने कहा- ''ठीक है काका!''

तिलक की आँटी भी उसे बहुत प्यार करती थीं। वह उसके लिए कुछ फल आदि खाने की चीजें ले आईं।

तिलक ने सुबोध काका के यहाँ से आकर अपने विद्यालय का गृहकार्य आदि किया। अपनी छोटी बहन रश्मि के साथ कुछ देर बैडमिंटन खेला। शाम के साढ़े सात बज गए थे। माँ ने दोनों के लिए भोजन परोस दिया। दोनों ने साथ-साथ खाया। उसके पिताजी भी आ गए थे।

दोनों बहन-भाई पढ़ाई करते रहे। साढ़े नौ बज गए थे। दोनों ने सोने से पहले ब्रश कर दाँत साफ किए। नित्य की भाँति निद्रा रानी ने अलार्म बजा दिया, अर्थात् दोनों को नींद आने लगी। दोनों ही पाँच बार गायत्री मंत्र अर्थ सहित पढ़कर सो गए थे।

नित्य की भाँति सुबह पाँच बजे उनकी नींद खुल गई थी। दोनों को ही माँ ने पीने के लिए गुनगुना पानी दिया। दोनों ही झटपट शौचालय को गए। घर में दो शौचालय थे। नित्य की भाँति पढ़ाई, जलपान आदि कर बस्ते में अपना टिफिन और चीजें रखकर विद्यालय चले गए थे।

आज शाम को सुबोध काका से तिलक को मिलना था। उसे किताबों की बहुत आवश्यकता थी। वैसे माँ ने कोरियर से किताब मँगाने के लिए हाँ कह दिया था, लेकिन नन्हें तिलक के मन में तो कुछ और ही चल रहा था।

नियत समय पर तिलक सुबोध काका से मिलने उनके घर पहुँच गया। तिलक को देखते ही वे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने तिलक को अपने अंक में भर लिया। तिलक की पत्नी ने भी बहुत प्यार किया।

सुबोध ने कहा- ''बेटा! तुम्हारा विचार बहुत अच्छा है। मैं अपनी नौकरी छोड़ता हूँ और कल से ही अपनी योजना को धरातल पर लाकर काम प्रारम्भ करता हूँ। खाना डिब्बावालों से बात करते हैं और त्वरित तिलक कोरियर नाम से काम शुरू करते हैं।''

इतना सुनना था कि तिलक की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। वह इस योजना को अब अपने पिताजी और माँ से भी साझा करना चाहता था।

सुबोध काका के घर से आकर उसने अपने विद्यालय का काम किया, तब तक उसके पिताजी भी काम पर से आ गए थे। उसने अपने माँ व पिताजी को अपनी योजना बताई, तब उसके माँ-पिताजी भी बहुत प्रसन्न हुए और सुबोध जी के साथ व्यवसाय में पैसा लगाने के लिए सहमत हो गए।

सुबोध जी का घर मुख्य सड़क पर ही स्थित था, उसी में बाहर के कक्ष में कोरियर कम्पनी की शुरुआत हो गई। औपचारिकताएँ पूरी की गईं।

भोजन सप्लाई करने वाले कई डिब्बावाले भाई लोग सहयोग देने के लिए राजी हो गए। काम चल पड़ा। पहले दिन से ही ऐसी शुरुआत हुई कि दोनों घरों में खुशियाँ ही खुशियाँ बिखर गईं।

तिलक की किताबें दिन के दिन मात्र चालीस

रुपये के व्यय में जैसे ही तिलक को मिलीं कि उसकी खुशी में ऐसे चार चाँद लगे कि उसने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। ग्राहकों के लिए १० ग्राम से लेकर तीन किलो तक का सामान शहर के शहर में ४० रुपये से १८० रुपये के बीच आसानी से पहुँचने लगा। कोरियर कम्पनी की कीर्ति दिन दूनी रात चौगुनी होने लगी। डिब्बावालों की सेवा लेने के साथ-साथ कुछ अन्य स्टाफ भी बढ़ता गया। तीन माह यह प्रयोग बहुत सफल रहा। कोरियर कम्पनी स्टार्ट-अप मुख्य रूप से मोबाईल एप्लीकेशन से जोड़कर इस तरह पेपर्स एंड पार्सल नाम से लॉजिस्टिक सेवा देने वाली स्टार्टअप कम्पनी की सुचारू रूप से शुरुआत हो गई। पैथोलॉजी लैब, बुटीक शॉप्स और ब्रोकरेज कंपनी जैसे ग्राहक भी सेवाएँ लेने लगे।

छोटी सी आयु का तिलक अपनी पढ़ाई भी मेहतन से करता और शाम को समय मिलते ही थोड़ी देर के लिए सुबोध काका की काम में मदद भी कर देता। लेकिन सप्ताहांत में कम्पनी के वह आवश्यक कार्य निपटाता। इस तरह आठवीं कक्षा से वह बारहवीं कक्षा में पहुँच गया था।

उसका सपना था कि ऐसी सेवा शहर से बाहर के लिए भी शुरू की जाए। वह अपने सपने को साकार करने में जी जान से जुट गया था। आज वह कुछ देर के लिए आकाश में नन्हें पंछियों की उड़ान देखता रहा।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न की पत्नियों के नाम बताओ?*
- *संकर्षण नाम से किस यादव वीर को पुकारा जाता है?*
- *सन् १९५६ में नेपाल की सरकार ने भारत से संबंधित डाक टिकट छपवाया, उस पर किसका चित्र था?*
- *कौन सी पवित्र नदी दक्षिण की गंगा मानी जाती है?*
- *ऋषि बोधायन रचित शुल्व-सूत्र में गणित की किस शाखा का वर्णन है?*
- *प्राचीन काल में कश्मीर तथा उसका उत्तर-पश्चिम भू-भाग किस जनपद में आता था?*
- *विश्व का सबसे पहला शल्य-चिकित्सक कौन माना जाता है?*
- *बंगाल में १९ वर्ष का वह क्रांतिकारी कौन था जिसके बलिदान ने सन् १९०९ में जागृति की एक लहर पैदा कर दी?*
- *मुगल आक्रांता अकबर से चित्तौड़ दुर्ग की रक्षा में वीर गति पाने वाले महावीर कौन थे जो लोकदेवता बन गए?*
- *संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार के स्वास्थ्य को लेकर किस प्रसिद्ध क्रांतिकारी ने ९ जुलाई, १९३९ को पत्र लिखा था?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

शिक्षक दिवस

– डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

ज्ञान हमारा सदा बढ़ाते।
और सदा अज्ञान मिटाते।।
जीवन पथ पर मान दिलाते।
मंजिल–मंजिल गौरव पाते।।
माली बनकर फूल खिलाते।
बागों–बागों महक लुटाते।।
कठिन परीक्षा सफल बनाते।
हर मुश्किल में साथ निभाते।।
साहस हिम्मत त्याग सिखाते।
वीर हमारे कब घबराते।।
हर आँधी से हमें बचाते।
तूफानों से यह टकराते।।
अँधियारे में मार्ग दिखाते।
उजियारे के पाठ पढ़ाते।।
राष्ट्रपति की याद दिलाते।
राधाकृष्णन् हमें सुहाते।।
गुरु पूर्णिमा पूजे जाते।
गुरु हमारे यह कहलाते।।
शिक्षक दिवस का पर्व मनाते।
पाँच सितम्बर इसे मनाते।।

– भोपाल (म. प्र.)

शिक्षक भाग्य–विधाता है

– श्रीमती सुधा मेठी

शिक्षक भाग्य विधाता है, शिक्षक का है शिक्षण कार्य।
शिक्षक का ही नाम पुरोहित, शिक्षक कहलाता आचार्य।।
सत्यनिष्ठ कर्त्तव्य निष्ठ,
शिक्षक करता है विद्या दान।
विनय शीलता सिखलाता है,
शिक्षक शिष्यों को विद्वान।।
शिक्षक जो आचरणवान है, कहलाता आचार्य महान।
वही पूज्य होता है जग में, पाता है सबसे सम्मान।।
शिक्षक तो वह दीपक है जो,
जलकर भी प्रकाश देता है।
ऐसे आदर्श शिक्षक को,
सारा देश नमन करता है।।
भाग्यशाली है वह शिष्य, जिसने गुरु का आशीष है पाया।
गुरु के आशीर्वाद से हमने, जीवन को सफल बनाया है।।

– आगर–मालवा (म. प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'शिक्षक' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

अध्यापक जी हमारे

– शैलेन्द्र सरस्वती

न है उनकी लंबी मूँछें,
न है उनके हाथ में डंडा।
हमें पढ़ाएँ बड़े प्यार से,
कॉपी में नहीं देते अंडा।।

खेलकूद से मना करें न,
कभी वे खेलें संग हमारे।
कभी घूमने हमें ले जाते,
दिखलाने कुदरती नजारें।।

एक दोस्त के जैसे प्यारे,
लगे न उनसे कोई डर।
अध्यापक जी है हमारे,
दुनिया में सबसे बेहतर।।

– बीकानेर (राजस्थान)

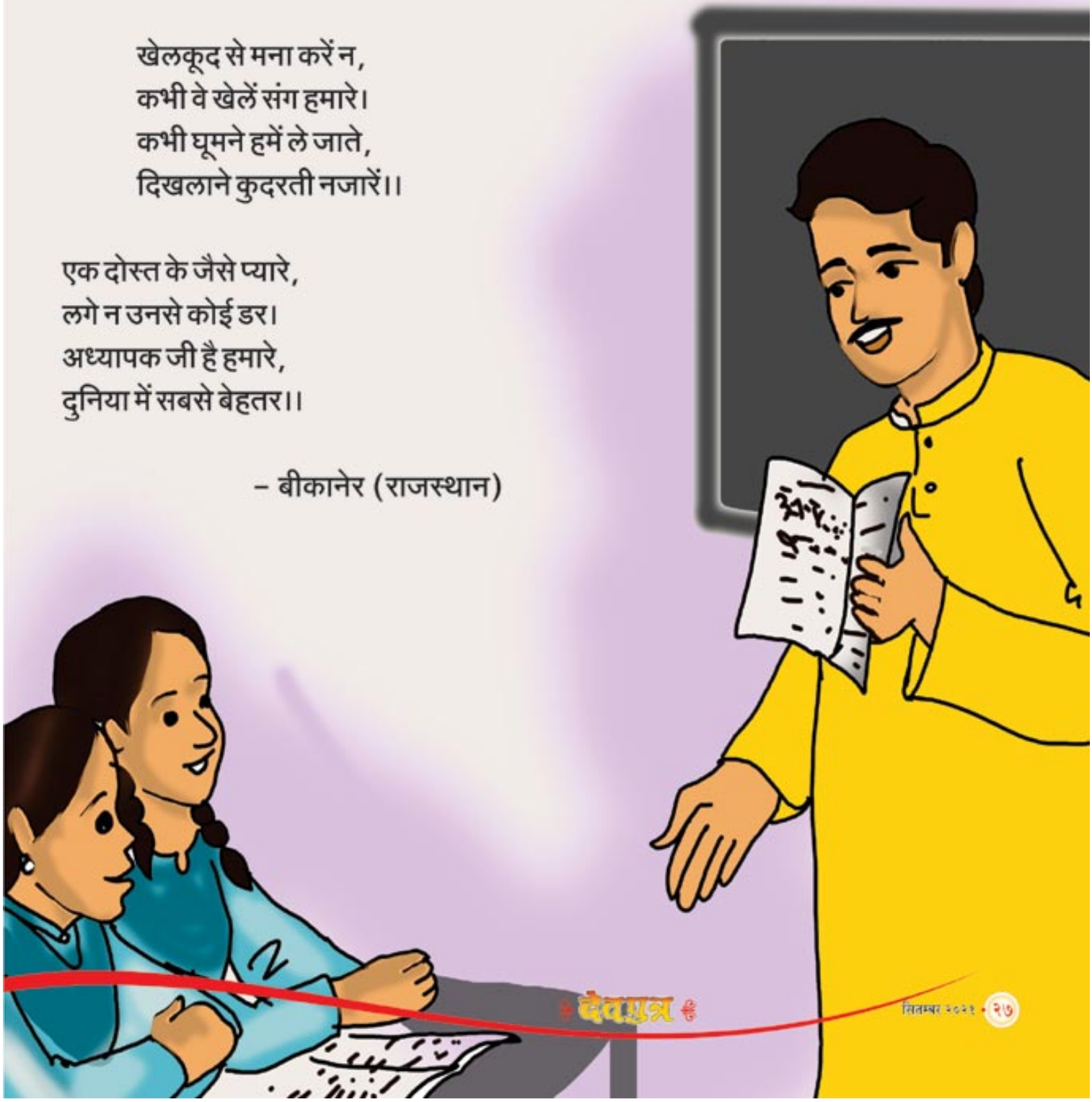

मोनू की मस्ती

– रेनू मंडल

जब से प्रेक्षा नई कक्षा में आई थी, वह बहुत परेशान थी। कारण था, उनका कक्षानायक (मॉनीटर) मोनू। उसका कक्षा में दबदबा था। बच्चे उससे डरते थे। नित नई शरारतों से वह बच्चों को परेशान किया करता था।

एक दिन कक्षा में उसने अपने से आगे बैठे अंकित की कमर में कागज की पूँछ लगा दी। अंकित को इसका पता नहीं चला। वह अपनी कॉपी देने के लिए शिक्षिका के पास गया तो बच्चे उसे देख हँसने लगे। अंकित को समझ नहीं आया, सभी उसे देख हँस क्यों रहे हैं? शिक्षिका के चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गई फिर उन्होंने गुस्से से पूछा– ''यह शरारत किसने की है?'' बच्चों को पता था फिर भी किसी ने मोनू का नाम नहीं लिया।

यही नहीं, बीच की छुट्टी के समय बच्चे अपना–अपना नाश्ता निकालकर खाते तो मोनू अपना नाश्ता नहीं खोलता था और दूसरे बच्चों का नाश्ता खा लेता था। एक दिन प्रेक्षा ने उससे पूछा था– ''तुम अपना नाश्ता क्यों नहीं खाते हो? इस पर वह अकड़कर बोला– ''आज तक कक्षा में किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मुझसे यह बात पूछे, अपना भला चाहती हो तो चुपचाप अपना नाश्ता दे दिया करो।'' प्रेक्षा मुँह बनाकर चुप हो गई।

एक दिन तो हद हो गई। प्रेक्षा के पेन्सिल बॉक्स में नई रंगबिरंगी पेन्सिल देख मोनू समीप आकर बोला– ''तुम्हारी पेन्सिल तो बहुत सुंदर है।''

''मेरे पिताजी मेरे लिए लाए हैं।'' प्रेक्षा खुश होकर बोली।

''यह पेन्सिल मुझे दे दो और मेरी पेन्सिल ले लो।'' कहते हुए मोनू ने अपनी साधारण सी पेन्सिल उसके डेस्क पर रख दी और उसकी बढ़िया पेन्सिल उठा ली।

''नहीं नहीं, अपनी पेन्सिल मैं तुम्हें नहीं दूँगी।'' प्रेक्षा ने उसके हाथ से पेन्सिल खींचनी चाही तो मोनू बोला– ''देखो प्रेक्षा! तुम पेन्सिल मुझे नहीं दोगो तो मैं कक्षा शिक्षिका से तुम्हारी शिकायत करूँगा कि तुम कक्षा में बहुत शोर मचाती हो और मेरा कहा भी नहीं मानतीं।''

''किन्तु मैं शोर कहाँ मचाती हूँ? सहमते हुए उसने कहा।

मोनू शरारत से मुस्कुराया और बोला– ''हाँ, किन्तु कहने में क्या हानि है। कक्षा के सारे बच्चे भी मेरा साथ देंगे।''

प्रेक्षा ने बच्चों की ओर नजर डाली तो सभी इधर–उधर देखने लगे। प्रेक्षा को बुरा लगा। छुट्टी के समय उसने पिंकी और सोनू से पूछा– ''आखिर तुम सब मोनू से डरते क्यों हो? उसकी शिकायत कक्षा शिक्षिका से क्यों नहीं करते?''

सोनू बोला– ''एक बार राजा ने उसकी शिकायत की थी। बाद में मोनू ने उसकी पिटाई कर दी। तभी से मोनू से सब डरते हैं।''

''क्या हम सब हमेशा मोनू से डरेंगे? नहीं यह गलत है।'' प्रेक्षा सोचने लगी।

घर आकर उसने सारी बात अपने पिताजी को बताई तो वे बोले– ''तुम सब बच्चे आपस में संगठित हो जाओ। एकता में बहुत शक्ति होती है। एकता के दम पर ही तुम सब उसे सबक सिखा सकते हो।''

प्रेक्षा ने मोनू की अनुपस्थिति में सभी से पिताजी की बात बताई तो वे बोले– ''ठीक है प्रेक्षा! हम सब

तुम्हारे साथ हैं। तुम जैसा कहोगी, हम करेंगे। मोनू की ज्यादतियों से हम सभी परेशान हैं।''

उसी दिन से प्रेक्षा अवसर की तलाश में रहने लगी। एक दिन कक्षा में बच्चे आपस में चर्चा कर रहे थे, ''कल से गणेश चतुर्थी का त्यौहार शुरु हो रहा है। अब तो दस दिन खूब मजा करेंगे।''

''शाला में भी गणेश भगवान होते तो कितना मजा आता।'' रिंकू बोला।

मोनू मुस्कुरा उठा और बोला– ''चलो दस दिनों के लिए तुम लोग मुझे अपना गणेश भगवान का प्रतिनिधि समझो। ठीक है न?''

एक क्षण के लिए प्रेक्षा ने कुछ सोचा फिर तुरंत बोली– ''ठीक है, आज से तुम हमारे लिए गणेश भगवान के प्रतिनिधि हो।''

प्रेक्षा के संकेत पर सब बच्चे खुशी से उसकी हाँ में हाँ मिलाने लगे। मोनू को बड़ा मजा आया। अरे वाह! वह तो भगवान का प्रतिनिधि बन गया। उसने कहा– ''कल से तुम लोग प्रतिदिन सुबह आकर मुझे लड्डू का भोग लगाओगे।''

सचमुच अगले दिन से प्रतिदिन बच्चे अपने–अपने घर से मोनू के लिए लड्डू लाने लगे। लड्डू खाकर वह बहुत प्रसन्न था। आजकल वह अपने साथियों को तंग भी नहीं कर रहा था।

एक दिन रिंकू उससे बोला– ''भगवन्! आप तो प्रतिदिन लड्डू खाते हैं किन्तु हमारा पिज्जा खाने का मन है। हमारी यह छोटी सी इच्छा पूरी करो न!''

साथियों से अपने लिए भगवन् शब्द सुनकर मोनू खुशी से कुप्पा हो उठा और अगले दिन सबके लिए पिज्जा ले आया। अब तो बच्चों को इस खेल में मजा आने लगा। वे मोनू से नित नई माँगें करने लगे और शाम में आकर मोनू भी उनकी माँगें पूरी करने लगा।

एक दिन उन्होंने मोनू से ऑडिटोरियम की खिड़की पर क्रिकेट की गेंद से छक्का मारने को कह दिया। तैश में आकर मोनू ने भी क्रिकेट गेंद खिड़की पर दे मारी। उसी समय गलियारे से कक्षा शिक्षिका निकल रही थीं। उन्होंने मोनू को गेंद मारते देख लिया। मोनू को अत्यधिक डाँट पड़ी। उसे कक्षानायक के पद से तो हटाया ही साथ ही दण्ड भी लगाया। मोनू कुछ देर के लिए उदास हुआ किन्तु बच्चों ने उसे फिर से मना लिया। इसी तरह शरारतें करते हुए नौ दिन बीत गए।

दसवें दिन विद्यालय में छुट्टी थी। प्रेक्षा बोली– ''कल सुबह सब मेरी सोसायटी के उद्यान में आ जाना। कल पूजा का अंतिम दिन है।''

अगली सुबह सब बच्चे उद्यान में एकत्रित हो गए। जैसे ही मोनू आया, बच्चों ने उसके गले में माला डाल दी। वह खुशी में फूला नहीं समाया और बोला– ''भगवान! तुम सबसे प्रसन्न हैं। चलो, अब हमें नाच कर दिखाओ।''

सब नाचने लगे। अचानक प्रेक्षा बोली– ''पूजा समाप्त हुई। बोलो, गणपति बप्पा'' ''मोरया'' सभी बच्चे जोर से चिल्लाए और इसी के साथ उन्होंने मोनू को कंधों पर उठा लिया।

गणपति बप्पा मोरया के जयघोष लगाते हुए वे सब सोसायटी से आगे तालाब की ओर बढ़ चले। अभी तक मोनू को मजा आ रहा था किन्तु अब उसका दिल घबराने लगा। वह बोला– ''अरे अरे! मुझे नीचे उतारो। कहाँ ले जा रहे हो?''

प्रेक्षा बोली– ''मोनू, आज गणपति का विसर्जन है और तुम हमारे गणपति के प्रतिनिधि हो। इसलिए तुम्हारा विसर्जन भी करने तालाब की ओर जा रहे हैं।'' भयभीत होकर मोनू चिल्लाया– ''नहीं नहीं, मैं गणपति का प्रतिनिधि नहीं हूँ। तुम्हारा साथी हूँ। यह सब तो एक विनोद (मजाक) था।''

''हमें पता है, यह सब एक विनोद था किन्तु जो तुम अब तक करते रहे हो, वह विनोद नहीं था। तुमने कभी हमें अपना साथी नहीं समझा। हमेशा सबको परेशान किया।'' प्रेक्षा बोली। मोनू रूआँसा हो उठा। ''मुझे क्षमा कर दो। मैं अब कभी किसी को परेशान नहीं करूँगा। सबके साथ मिलजुल कर रहूँगा।''

– मेरठ (उ. प्र.)

कर भला हो भला

– हेमंत यादव

दोपहर का समय था। बड़ी तेज धूप थी। आसमान से जैसे आग बरस रही थी। इस तेज धूप और गर्मी में सत्तर–पचहत्तर वर्ष का एक बूढ़ा आदमी धीरे–धीरे चलते हुए कहीं जा रहा था। उसकी चाल देखकर लग रहा था कि जैसे उसके पाँव में दर्द हो।

वह कभी–कभी रास्ते में रुककर पीछे मुड़कर देखता भी था। वास्तव में वह किसी ऑटो के आने की राह देख रहा था। तेज धूप और गर्मी में उससे चला नहीं जा रहा था। वह सोच रहा था कि कोई ऑटो मिल जाएगा तो वह उस पर बैठ जाएगा।

पवन अपने घर के बाहर अपनी स्कूटी को साफ कर रहा था। उसे कोचिंग क्लास जाना था। तभी वह बूढ़ा आदमी पवन के पास आकर रुक गया और सकुचाता हुआ बोला– ''बेटा! क्या तुम मुझे बैंक तक छोड़ दोगे? मुझसे चला नहीं जा रहा है। मेरे घुटने में दर्द है।'' पवन ने कहा– ''काका! मुझे गणित की कोचिंग क्लास करने जाना है। अगर मैं आपको बैंक छोड़ने जाऊँगा, तो मेरी कक्षा छूट जाएगी। मैं नहीं जा सकता।''

बूढ़ा आदमी निराश हो गया। उसने आसमान की ओर देखा और अपनी जेब से एक रुमाल निकाल कर धूप से बचने के लिए सिर पर रख लिया। फिर धीरे–धीरे आगे जाने लगा।

तभी पवन को उस पर दया आई। उसने विचार किया– ''मेरी कोचिंग क्लास भी तो बैंक की ही ओर है। मैं इनको बैंक के पास छोड़कर अपनी कक्षा चला जाऊँगा।'' यह सोचकर उसने स्कूटी चालू की और उनके पास ले जाकर कहा– ''काका! बैठ जाइए, मैं आपको बैंक के पास छोड़ दूँगा।''

''अरे बेटा! भगवान तुम्हारा भला करे।'' बूढ़ा आदमी स्कूटी पर बैठते हुए बोला। ''तुम बहुत अच्छे बच्चे हो।'' अपनी प्रशंसा सुनकर पवन को बहुत अच्छा लगा। बैंक के पास स्कूटी रोक कर पवन ने बूढ़े आदमी से कहा– ''काका! आप मेरा मोबाईल नम्बर ले लीजिए। आपका बैंक का काम जब हो जाएगा तो मुझे कॉल कर लीजियेगा। मैं यहाँ आ जाऊँगा और आपको वापस घर छोड़ दूँगा।''

''अरे बेटा! तुम क्यों परेशान होते हो।'' बूढ़े आदमी ने कहा– ''मैं इधर से ऑटो से चला जाऊँगा।

''नहीं काका! इसमें परेशानी की कोई बात नहीं है। आखिर मुझे भी तो वापस उधर ही जाना है।'' पवन बोला और अपना मोबाईल नम्बर दे दिया।

एक घंटे में बूढ़े आदमी का बैंक का काम हो गया। वह बैंक से जैसे ही बाहर आया, उसकी नजर पवन पर पड़ी। पवन वहाँ पहले से ही आकर खड़ा था।

''अरे बेटा! तुम कब आए?'' बूढ़े आदमी ने मुस्कुराते हुए पवन से पूछा– ''तुमने अपनी कक्षा की न? ऐसा तो नहीं कि मेरे लिए तुम कक्षा छोड़कर आ गए?'' ''नहीं काका! मैं कक्षा करके आया हूँ।'' पवन स्कूटी चालू करता हुआ बोला– ''आप आराम से बैठिए।'' वह स्कूटी के पीछे बैठ गया। पवन घर की ओर चल दिया।

''बेटा! तुम मुझे अपने घर के पास उतार देना। वहाँ से मैं पैदल ही चला जाऊँगा।'' बूढ़े आदमी ने कहा– ''मेरा घर वहाँ से अधिक दूर नहीं है।''

''काका! मैं आपको आपके घर तक छोड़ आऊँगा।'' पवन बोला– ''इसी बहाने आपका घर भी देख लूँगा।'' ''अरे बेटा! यह तो बड़ी अच्छी बात कही तुमने।'' बूढ़े आदमी ने पवन को अपने घर का पता बता दिया। उसके घर के आगे स्कूटी रोकते हुए पवन बोला– ''ठीक है काका! अब मैं जाता हूँ।''

''अरे बेटा! ऐसे कैसे जाते हो।'' उसने पवन को रोका और मनुहार करते हुए कहा– ''बेटा! घर के अंदर चलो। तुम्हें अपनी पत्नी से मिलवाता हूँ। वह तुमसे मिलकर बहुत प्रसन्न होगी।'' इतना कहकर उसने घंटी बजाई।

बूढ़े आदमी की पत्नी ने दरवाजा खोला। पवन को देखकर उसकी पत्नी ने पूछा– ''यह कौन है?''

बूढ़े आदमी ने पवन के बारे में सारी बातें बताई। उनकी पत्नी बहुत प्रसन्न हुई। बोली– ''बहुत भला लड़का है।'' इसके बाद वे अंदर जाकर पवन के लिए पानी और चाय ले आईं।

पवन चाय पीता हुआ बोला– ''काका! आपने तो अपने बारे में कुछ बताया ही नहीं।''

''बेटा! मैं एक सेवानिवृत्त शिक्षक हूँ। श्रीकांत वर्मा नाम है मेरा। दस वर्ष हो गए मुझे सेवानिवृत्त हुए।'' उन्होंने बताया– ''शाला में मैं बच्चों को गणित पढ़ाता था।'' एक पल रुककर वे कुछ सोचते हुए बोले– ''बेटा! तुम गणित पढ़ने कोचिंग क्लास में जाते हो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें गणित पढ़ा सकता हूँ।''

यह सुनकर पवन कुछ सोचने लगा।

''क्या सोचने लगे बेटा?'' वह मुस्कुराते हुए बोला– ''मैं कोई ट्यूशन नहीं पढ़ाता हूँ। बस, तुम्हें पढ़ाना चाहता हूँ।''

''मगर आपकी फीस?'' अभी पवन इतना ही बोल पाया था कि उन्होंने टोकते हुए कहा– ''मैं तुमसे कोई शुल्क नहीं लूँगा बेटा! तुम बहुत ही अच्छे बच्चे हो। तुम्हें पढ़ाकर मुझे बहुत अच्छा लगेगा।''

कुछ सोचकर पवन उनसे पढ़ने के लिए राजी हो गया और उनका धन्यवाद देते हुए अपने घर लौट गया।

– फारबिसगंज (बिहार)

स्तंभ

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

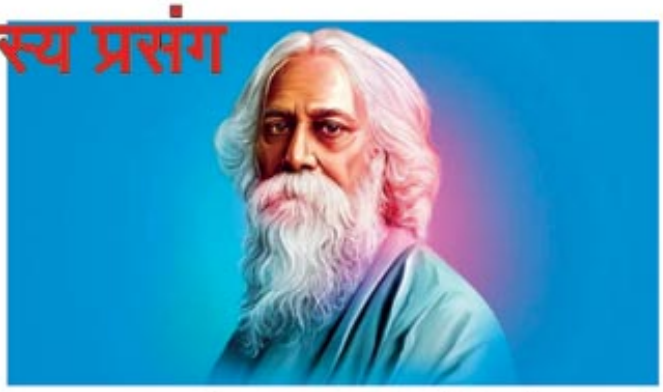

◆ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर को आम खूब पसन्द थे। वे उन दिनों चीन यात्रा पर थे। उनके आम्रप्रिय होने की बात फिलिपाइन तक पहुँची और वहाँ के आम गुरुदेव के लिए किसी ने श्रद्धापूर्वक भेजे। गुरुदेव आम खाने बड़े शौक से बैठे लेकिन उन आमों में रेशे इतने अधिक थे कि उन्हें चाकू से काटकर खाना कठिन था। गुरुदेव ने आमों को नमस्कार किया और चुपचाप बैठ गए।

किसी ने पूछा–''गुरुदेव! यह आप क्या कर रहे हैं?'' गुरुदेव का उत्तर था– ''इन्हें प्रणाम कर रहा हूँ। इनके रेशे मेरी दाढ़ी से भी लम्बे हैं अत: ये तो आम नहीं मेरे बड़े भाई हुए।''

◆ एक गंजा युवक गुरुदेव से मिलने आया। वे विनोद में बोले– ''चाँद से मुखड़े कई देखे थे, चाँद–सी खोपड़ी आज ही देखी।'' युवक झेंप मिटाने की गरज से बोला– ''मेरे पिताजी भी ऐसे ही थे।'' गुरुदेव ने तपाक से कहा– ''बड़े आज्ञाकारी सुपुत्र जान पड़ते हो।''

–

मातृभाषा वंदन है

– विमला कँवर राठौड़

तुलसी सुर, कबीरा है,
पंत प्रसाद और मीरा है।
मुस्कानों का दर्पण है,
शब्दों का स्पंदन है।।
वंदन है! अभिनंदन है,
मातृभाषा को वंदन है।
नवरसों की गागर है,
छोटा लगता सागर है।
हर एक दिल की धड़कन है,
अमृत–विष का मंथन है।।
वंदन है! अभिनंदन है,
मातृभाषा को वंदन है।
सावन सी मनभावन है,
गंग–जमन सी पावन है।
पारस लौह का संगम है,
जीवन होता कंचन है।।
वंदन है! अभिनंदन है,
मातृभाषा को वंदन है।
भूषण और वरदाई है,
तुलसी की चौपाई है।
लहर–लहर परिवर्तन है,
युगों–युगों का नर्तन है।।
वंदन है! अभिनंदन है,
मातृभाषा को वंदन है।
अर्पण और समर्पण है,
इसमें जीवन–दर्शन है।
नव आशाओं की चितवन,
कुंकुम अक्षत चंदन है।।
वंदन है! अभिनंदन है,
मातृभाषा को वंदन है।

– इन्दौर
(म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नोत्तरी के सही हल

१) माण्डवी, उर्मिला, श्रुतिकीर्ति। २) बलराम। ३) मुरलीधर श्रीकृष्ण। ४) कावेरी। ५) ज्यामिति (रेखा–गणित)। ६) कम्बोज। ७) सुश्रुत। ८) खुदीराम बोस। ९) कल्ला जी राठौड़। १०) वीर सावरकर।

एक पंथ दो काज

– गोविन्द भारद्वाज

मनसा कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करता था। इसलिए मिट्टी ढोने के लिए उसने आठ–दस गधे पाल रखे थे। उसका एक लड़का था। जिसका नाम था राजू। राजू आठवीं कक्षा में पढ़ता था। कोरोना महामारी के कारण राजू का विद्यालय बंद था। वह घर पर रहकर ही पढ़ाई करता था।

एक दिन राजू हिन्दी का पाठ पढ़ रहा था। उसमें उसने एक मुहावरा पढ़ा– ''एक पंथ दो काज।'' उसने चाक पर बर्तन बनाते अपने पिताजी से पूछा– ''पिताजी! एक पंथ दो काज का क्या अर्थ होता है?''

''अरे! यह तो बड़ा आसान है। इसका अर्थ होता है कि एक साथ दो काम करना।'' मनसा ने बताया।

राजू ने पूछा– ''कोई उदाहरण देकर बताओ पिताजी!''

मनसा ने कहा– बेटा! जैसे मैं चाक पर काम करते–करते मिट्टी के बर्तन खरीदने आने वाले ग्राहकों को बर्तन दिखाकर बेच देता हूँ। काम का काम और दाम का दाम।''

''क्या बात है पिताजी! आपने तो मुहावरा समझाते हुए भी दूसरा मुहावरा बता दिया।'' राजू ने मुस्कुराते हुए कहा।

उसी समय राजू की माँ बोली– ''राजू पढ़ाई करने के बाद इन गधों को जंगल की ओर ले जाना। कुछ देर हरी घास चर आएँगे। बरसाती मौसम के कारण मिट्टी ढोना बंद है, इसलिए खूंटे से बंधे–बंधे ये भी परेशान हो गए हैं।''

''माँ मुझे पढ़ना है।'' राजू ने कहा। ''अरे! पढ़ने से कौन रोक रहा है तुझे। किताब ले जा और वहाँ खुले वातावरण में पढ़ लेना.. वहाँ गधे भी चरते रहेंगे।'' माँ ने उसे समझाते हुए कहा।

इस बीच मनसा ने कहा– ''राजू! अभी मैंने तुझे कौन सा मुहावरा समझाया था?''

''पिताजी! एक पंथ दो काज।''

इस पर मनसा ने कहा– ''तेरी माँ भी तो यही कह रही है कि गधों को चराते–चराते अपनी पढ़ाई भी करते रहना। वहाँ तुझे कोई रोक–टोक भी नहीं करेगा।'' राजू ने माँ–पिताजी की बात मानते हुए गधों को लेकर जंगल की ओर निकल गया।

उन गधों में एक गधा थोड़ा शरारती था। वह चरते–चरते इधर–उधर खेतों की ओर चला जाता। फसल खराब न कर दे, इसलिए उस पर ध्यान रखना भी आवश्यक था।

राजू ने एक योजना बनाई ताकि उसे पढ़ाई में रुकावट भी न आए और उस गधे पर भी निगरानी रहे। वह अपनी किताब लेकर गधे की पीठ पर बैठ गया। गधा चरता रहा और राजू किताब पढ़ने लगा। उसकी पीठ पर बैठकर उसे आनंद आने लगा।

आते–जाते लोग जो उसे देखते तो यही कहते– ''बच्चा हो तो इसके जैसा मेहनती। एक पंथ दो काज कर रहा है। अपनी पढ़ाई भी और गधों की रखवाली भी।

– अजमेर (राजस्थान)

वीर सावरकर और हिन्दी

– अभय मराठे

हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए, स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर १९०६ से ही प्रयत्नशील थे। लंदन के भारत भवन (इंडिया हाउस) में **'अभिनव भारत'** के कार्यकर्ता प्रतिदिन रात्रि को सोने के पहले, स्वतंत्रता के संकल्पों को दोहराते थे। इस चार सूत्रीय संकल्पों में चौथा सूत्र, हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा और देवनागरी को राष्ट्रलिपि घोषित करने का था।

जब सावकर जी अंदमान की सेल्यूलर जेल में बंद थे, तो उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार प्रारंभ किया। १९११ में ब्रिटिश सरकार ने कारावास में राजबंदियों को कुछ सुविधाएँ देना प्रारंभ किया, तो उसका लाभ सावरकर जी ने हिन्दी भाषा को पढ़ाने के लिए लिया।

वे सभी राजबंदियों को हिन्दी भाषा सीखने का आग्रह करने लगे। प्रारंभ में कुछ राजबंदियों ने, हिन्दी भाषा को मुसलमानों की भाषा कहा, क्योंकि बंगाल और दक्षिण के लोग हिन्दी भाषा को मुसलमानों की भाषा ही मानते थे।

बंगाली और दक्षिण क्षेत्र के राजबंदियों को हिन्दी भाषा के बारे में अल्प ज्ञान होने के कारण वे कहते थे कि– ''हिन्दी भाषा में व्याकरण और वांग्मय नहीं के बराबर है।'' लेकिन सावरकर जी ने इन सभी आक्षेपों का समाधान करते हुए कहा– ''हिन्दी भाषा में साहित्य, व्याकरण, प्रौढ़ता, भविष्य और क्षमता को निर्देशित करते हुए, यही भाषा राष्ट्र–भाषा के योग्य है। यही नहीं यह भाषा और नागरी लिपि पहले से ही राष्ट्र–भाषा बन चुकी है।''

इस उपक्रम में, उन्होंने हिन्दी की कई पुस्तकें बाहर से मंगवाकर, राजबंदियों की कक्षाएँ लेना प्रारंभ कर दी। उनका यह भी आग्रह था कि, हिन्दी के साथ बंगाली, मराठी भाषा भी सीखना चाहिए। हिन्दी के साथ बंगाली भाषा, मराठी भाषा और पंजाबी भाषा भी सीखनी चाहिए। मराठी भाषा और बंगाली और पंजाब की गुरुमुखी भाषा भी सीखें। और उनके इस आग्रह को सभी ने माना और हिन्दी के साथ अन्य भाषाओं का ज्ञान संपादन करने की इस संधि का लाभ उठाया।

उनके प्रयासों और राजबंदियों के सहयोग से, अंदमान की सेल्यूलर जेल में, विपरीत परिस्थिति के बाद भी, हिन्दी पुस्तकों का एक ग्रन्थालय बन गया। कारावास में एक क्रम बन गया था। पहले मातृभाषा का ज्ञान, फिर हिन्दी भाषा और बाद में अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया जाता था। इसका लाभ अन्य अपराधी कैदियों ने भी उठाया और वे साक्षर हो गए थे।

वीर विनायक दामोदर सावरकर ने, अंदमान की नारकीय सेल्यूलर जेल को विश्वविद्यालय का स्वरूप दिया था। इसलिए वीर सावरकर जी को विश्वविद्यालय का **'कुलपति'** कहा गया था।

आगे कुछ माह बाद इसका असर यह रहा कि, राजबंदियों का पत्र व्यवहार हिन्दी भाषा में चलने लगा और उन पत्रों को जाँचने के लिए, कारावास प्रशासन को, एक हिन्दीभाषी व्यक्ति को, मुंशी के पद पर नियुक्त करना पड़ा था।

यह था स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर का प्रखर राष्ट्रवाद। उनके विचार पढ़ना और समझना ही राष्ट्रवाद की प्रथम सीढ़ी होगी।

– उज्जैन (म. प्र.)

हिंदी अपनाएँ

– रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक'

आओ, हम हिन्दी अपनाएँ,
हिन्दुस्थान महान बनाएँ।
तन, मन, धन अपना हो हिन्दी,
यश वैभव सपना हो हिन्दी।
हिन्दी में हम जगें सबेरे,
हिन्दी में दिन रात बिताएँ।
आओ, हम हिन्दी अपनाएँ।।

हँसें अगर तो हिन्दी विकसे,
यदि हम गाएँ हिन्दी सरसे।
हिन्दी को जीवन अर्पित कर,
कर्म वचन में साम्य बनाएँ।
आओ, हम हिन्दी अपनाएँ।।
पढ़ें, लिखें हम हिन्दी बोलें,
हिन्दी–सुमन झरें मुँह खोलें।
हिन्दी बने हमारी पूजा,
हिन्दी पर सर्वस्व लुटाएँ।
आओ, हम हिन्दी अपनाएँ।।
तीर्थ धाम हो अपनी हिन्दी,
भारत के मस्तक की बिन्दी।
बने विश्व भाषा यह सत्वर,
मिलकर ऐसा यज्ञ रचाएँ।
आओ, हम हिन्दी अपनाएँ।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

चुटकुले

छः अंगुल मुस्कान

◆ मोबाइल खराब बच्चा जिम्मेदार...
बच्चा खराब मोबाइल जिम्मेदार...

◆ जब कोई आपको बोले कि ''यह काम तुमसे नहीं होगा...।'' तो अधिक मत सोचो, गहरी साँस लो और बोले दो– ''मुझे करना भी नहीं है।''

◆ सही जोड़ियाँ केवल जूतों की होती हैं बाकी सब मन का वहम है।

◆ नाम में कुछ नहीं रखा श्रीमान! जिसमें एक भी रोटी नहीं होती लोग उसको भी डबल रोटी कहते हैं।

◆ ना जाने क्यों अपने रूप पर इतना घमंड है उसे। लगता है, उसका आधार कार्ड अभी तक नहीं बना है।

◆ **एक सहेली–** अरे यार पिछले महिने मेरा एक्सीडेंट हुआ था, तुम तो देखने ही नहीं आई?

दूसरी सहेली– क्षमा करना मैं भूल गई थी, अगली बार होगा तो अवश्य आऊँगी।

– विष्णु प्रसाद चौहान
ढाबला हरदू, उज्जैन (म. प्र.)

नहीं, अभी नहीं!

– डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

माँ सुयोग्य को जब भी कोई काम बताती, वह झट से मना कर देता। उसका उत्तर होता था, ''नहीं, अभी नहीं!'' यह सुनकर माँ ठगी सी रह जाती। वह कर भी क्या सकती थी सुयोग्य की इस ना–नुकुर की आदत के आगे। बस, मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करती थी माँ कि वह सुयोग्य को सद्‌बुद्धि दे।

प्रतिदिन की भाँति आज भी माँ ने सुयोग्य को कमरे से आवाज लगाई, ''बेटा! मैं पड़ोस की शालू मौसी के घर जा रही हूँ। तुम अपना गृहकार्य पूरा कर लेना।''

सुयोग्य की जीभ पर तो बस एक ही उत्तर रहता था। उसने बिना देर किए कह दिया– ''नहीं, अभी नहीं।'' इतना कहकर सुयोग्य ने टी. वी. का बटन चालू किया और लगा देखने कार्टून नेटवर्क। टी. वी. की आवाज छोटी बहन प्रगति के कानों पर पड़ी तो वह तिलमिला उठी। बोली– ''भैया! मैं अपना गृहकार्य कर रही हूँ। टी. वी. की आवाज कम तो कर देना तनिक।''

सुयोग्य कहाँ मानने वाला था। उसने प्रगति की बात सुनी–अनसुनी कर दी और मस्ती में टी. वी. देखता रहा। माँ के वापस लौटने पर प्रगति ने सुयोग्य की शिकायत की। इस पर सुयोग्य का उत्तर था– ''मुझे सुनाई नहीं पड़ा।''

पानी सिर से ऊपर निकलता जा रहा था। कोई रास्ता भी नहीं सूझ रहा था माँ को। कभी–कभी तो सुयोग्य दूसरों की पूरी बात सुनने से पहले ही बोल उठता– ''नहीं, अभी नहीं।'' हालाँकि इसकी हानि भी प्राय: उसे उठानी पड़ जाती थी। लेकिन, सुयोग्य तो ठहरा अपने मन का मालिक। उसे इसका तनिक भी पश्चाताप नहीं था कि वह ऐसा करके स्वयं अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है।

इस बार गर्मी की छुट्टियों में गाँव से दादाजी आने वाले थे। माँ ने सुयोग्य से कहा– ''तुम्हारे पिताजी स्टेशन जा रहे हैं दादाजी को लेने के लिए। क्या तुम उनके साथ जाना चाहोगे?''

सुयोग्य अपने कमरें में टी. वी. के सामने बैठा हुआ था। आधी बात सुनकर ही बोल पड़ा– ''नहीं, अभी नहीं।'' पिताजी चुपचाप अकेले ही दादाजी को लाने के लिए स्टेशन पहुँच गए जब दादाजी ने पूछा– ''सुयोग्य क्यों नहीं आया?'' तो पिताजी ने बहाना बना दिया।

दादाजी को देखकर सुयोग्य बहुत प्रसन्न हुआ। वह उनका खूब आदर करता था। कई बार तो वह स्वयं ही फोन करके दादाजी की कुशलक्षेम पूछा करता था। आज उसके दादाजी आँखों के सामने थे। उसे पढ़ाई और खेल के बाद जब भी समय मिलता, दादाजी के साथ ही बिताता था। दादाजी को भी वह देखकर अच्छा लगता था। प्रगति भी दादाजी का पूरा ध्यान रखती थी।

बाल भवन में बाल महोत्सव का आयोजन किया जाने वाला था। महोत्सव के पहले दिन एक वृत्तचित्र (डाक्यूमेंट्री फिल्म) दिखाए जाने का भी प्रस्ताव था। सुयोग्य और प्रगति ने दादाजी से चलने को कहा तो पिताजी ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर दी। तीनों बाल भवन में जा पहुँचे।

यह वृत्तचित्र बाल समस्याओं पर आधारित थी। फिल्म का नाम था– **'बदल गया बदलू'** इसमें दिखाया गया था कि बदलू दस वर्षीय एक ऐसा लड़का है जो माता–पिता के अलावा भाई–बहनों का कहना भी नहीं मानता था। बात–बात में उसे मना करने की आदत थी। परिणाम यह निकला कि वह तनावग्रस्त रहने लगा। उसके मन में निराशा और उदासी ने घर

कर लिया था। दुःख उसको जकड़े हुए था। उसकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। देखते ही देखते उसके सभी मित्र भी उससे किनारा करने लगे थे। अब तो वह अकेला पड़ता जा रहा था, नितांत अकेला। वह अपने मन की बात कहे भी तो किससे? उसे स्वयं पर क्रोध आने लगा। यही नहीं मानसिक रोगों ने भी उसे आ घेरा। उसका उपचार करवाया गया। तब कहीं जाकर गाड़ी पटरी पर आई।

फिल्म देखते-देखते, सुयोग्य चिल्ला उठा, ''नहीं! मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।''

''क्या नहीं होने दोगे बेटे?'' दादाजी ने पूछा।

सुयोग्य को ध्यान आया कि बगल में बैठे दादाजी उसकी ओर एकटक निहारे जा रहे थे। सुयोग्य के चेहरे पर कई रंग आ जा रहे थे। वह कुछ नहीं बोला। फिल्म समाप्त हुई। तीनों घर पहुँचे।

सुयोग्य ने दादाजी को सारी बातें खुलकर बता दी थीं। सुनकर दादाजी बोले- ''बेटे! ना-नुकूर करने की यह आदत 'नकारात्मकता' कहलाती है जो अत्यंत घातक है। अच्छा हुआ कि समय रहते तुम्हें इसका बोध हो गया अन्यथा तुम भी 'बदलू' की तरह ही मानसिक रोगी बन जाते।

''धन्यवाद दादाजी! यदि आप न होते तो, मेरा न जाने क्या हाल होता। मैं आपका आजीवन ऋणी रहूँगा।''

दादाजी ने सुयोग्य के सिर पर हाथ फेरा और उज्ज्वल भविष्य की कामना भी की। माँ और पिताजी ने सुयोग्य की ओर प्यार से देखा तो सुयोग्य ने सिर झुका लिया था।

- गुरुग्राम (हरियाणा)

आपकी पाती

'देवपुत्र' का जून–जुलाई २०२१ अंक मिल गया। मुखपृष्ठ बहुत ही सामयिक है। सुंदर चित्र का भाव अपना प्रभाव सहजता से छोड़ता है। आशा को अँधेरे में ऊर्जा की नई भोर समझना, आवश्यकता के साथ विशेष अनिवार्य है। 'अपनी बात में' बादल का रोचक उदाहरण देकर यह प्रेरणा उजागर की गई है कि 'मुश्किल नहीं है कुछ भी गर ठान लिया जाए' अर्थात मन की शक्ति को संकल्प में ढाल दिया जाए। 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' सफलता हेतु साहस और सावधानी को मास्क से अधिक आवश्यक मानकर चलना है। रचनाओं का चयन आपकी पारखी विचारधारा का प्रमाण है। मुफ्त में साँसों को ऑक्सीजन देने वाले वृक्षों से जुड़े पर्यावरण को बचाना ही विश्व पर्यावरण दिवस को सार्थक बनाना है। पत्रिका की यह रचनात्मक सामग्री बढ़िया प्रासंगिक है। संपादकीय परिवार के प्रति आभार सहित हार्दिक शुभकामना है।

– राजा चौरसिया,
कटनी (म. प्र.)

देवपुत्र के नाम चिट्ठी

भेज रहा हूँ बहुत प्यारे से
देवपुत्र के नाम चिट्ठी।
बातें करता है 'देवपुत्र'
कुछ खट्टी, कुछ मिट्ठी।

पढ़ने वाले लाखों हैं पर
चिट्ठी नहीं लिखते हैं।
नाम के लगते हैं सभी
'देवपुत्र' से प्यार करते हैं।

'देवपुत्र' पत्रिका सबकी
मन भावन बन जाती।
बच्चों बड़ों और बूढ़ों को
यह है खूब लुभाती।

जानकारियों और ज्ञान का
यह है एक पिटारा।
कविता और कहानी लेख
भरा है खूब सारा।

अब तो सब कोई पत्र
लिखने की आदत डालो।
घर पर रोज डाकिया
अब तो रोज बुला लो।

पत्र लिखने से बढ़ता है
आपस में भाई चारा।
यादगार बन जाता है
देखो पत्र हमारा।

– बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'
गोरखपुर (उ. प्र.)

पचास हजार

चित्रकथा-

कमाल कर दिया

– पूनम पाण्डे

आकाश की माताजी आज लगातार बोलती जा रहीं थीं। उन्हें लग रहा था आठवीं कक्षा में यदि आकाश का लेख इतना खराब और भद्दा होगा तो आगे जाकर क्या करेगा यह? आकाश छोटी कक्षा में तो साथ–सुथरा ही लिखा करता था किन्तु अब न जाने क्या हो गया था उसे। माँ सोचती रहतीं और जो सोचतीं उसे शब्दों में भी प्रकट करती जातीं। कल दोपहर जब से वह अध्यापक–अभिभावक बैठक में आईं थीं उनका चैन–शांति मानो समाप्त–सी हो चली थी। आकाश के पिता ने धीरज के साथ समझाया था कि एक बार उसे एक कॉपी दे दो और कहो कि प्रतिदिन आधा घण्टा भी साफ–सुथरा लेख बनाने का अभ्यास करेगा तो बस पन्द्रह दिन में मोती से अक्षर छापने लगेगा पर आकाश की माँ को स्वयं ही धैर्य न था तो वह धीरज से काम लेती भी कैसे?

वह एकदम अधीर और बैचेन थीं। जब–जब आकाश उनके सामने आता तब–तब उनके दिल की बात जिव्हा पर आकर फट पड़ती। आकाश स्वयं परेशान हो गया था एक ही बात बार–बार, माँ भी ना। पर वह माँ से बहस नहीं करना चाहता था। असल में माँ उसके लिए ईश्वर से कम नहीं थीं इसलिए वह कभी भी उनसे तकरार या उलझने वाली बात सोच तक नहीं सकता था।

उसने विनम्रता से एक खाली कॉपी निकालकर उसमें दिनाँक अंकित करके माँ को वचन दिया कि– ''प्रतिदिन लिखूँगा और पन्द्रह दिन में यह सौ पृष्ठ भर दूँगा।'' किन्तु माँ यह सब सुनकर जरा न पिघली– ''बोली एक–एक शब्द जाँच करूँगी लेख भी अच्छा होना चाहिए और मात्रा की गलती भी नहीं। यह भाषण और आगे बढ़ सकता था वह तो अच्छा हुआ आकाश कि नानी का फोन आया और माँ उनसे बात करने में व्यस्त हो गईं।

अब एक–एक करके बीत गये दो सप्ताह। पन्द्रहवें दिन शाम को आकाश ने माँ के हाथ यह कॉपी थमा दी। माँ कॉपी खोलतीं उससे पहले आकाश ने माँ से अनुरोध किया कि कृपया आप एक–एक शब्द पढ़ना, यह मेरी प्रार्थना है आपसे।

यह भी कोई कहने की बात थी माँ तो सब तय करके बैठीं थीं इसलिए वह कॉपी खोलकर पढ़ने लगीं। पहला पन्ना पूरा पढ़ा तो माँ की आँखों में आँसू आ गये। सरसरी तौर पर उन्होंने सभी पन्नों के शीर्षक देख डाले। उनके आकाश ने केवल लेख नहीं सुधारा था हर पृष्ठ पर अपनी माँ के विषय में ढेरों बातें लिखीं थीं। उनकी दिनचर्या उनका बोलना उनकी देखभाल और बचपन के किस्से जिनको शायद माँ भी व्यस्त दिनचर्या के कारण भूल गयीं थी। जैसे दूसरी कक्षा के वह किस्से जब आकाश को प्रश्नोत्तर याद नहीं होते थे और माँ रोटी बेलते हुए, पौधों को पानी देते हुए उसे

सब याद करा देती थी। ओ! प्यारा आकाश, उसी रात माँ ने वह पूरे पृष्ठ पढ़ लिए।

सचमुच लेख सुधर गया था। मात्रा की भी एक गलती न थीं। माँ ने वह कॉपी धरोहर के रूप में अपने गहनों वाली अलमारी में सहेज कर रख ली।

– कोटड़ा (राजस्थान)

समाचार

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा पोषण वाटिका हेतु बीज वितरण कार्यक्रम

सूर्या फाउण्डेशन एक सामाजिक संस्था है जो पिछले ३० वर्षों से देशहित के लिए कार्य कर रही है। संस्था, आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत देश के १८ राज्यों के ४०० गाँवों में सेवा कार्य कर रही है। इसके अन्तर्गत ६०० शिक्षकों तथा ५० पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के द्वारा पाँच आयाम– शिक्षा, संस्कार, समरसता, स्वास्थ्य और स्वावलंबन को आधार बनाकर कार्य चल रहा है।

ग्रामवासियों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, कोई बीमार न हो, सबको पोषक भोजन मिले, गाँव का पैसा गाँव में रहे, इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए संस्था के चेयरमैन पद्मश्री जयप्रकाश जी की प्रेरणा से घर–घर पोषण वाटिका अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत ५० गाँवों के २००० परिवारों में १० प्रकार की सब्जियों जैसे– लौकी, तोरई, बैंगन, टमाटर, हरी मिर्च, मूली, गाजर, भिंडी, कद्दू और सेम के बीच वितरित किए गए। साथ ही पोषण वाटिका को जैविक विधि से करने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

पहला सुख निरोगी काया के भाव से चलाए गए इस अभियान का परिणाम भी दिखाई दे रहा है। एक ओर जहाँ ग्रामीणों को जैविक ताजी एवं हरी सब्जियाँ मिल रही हैं तो वहीं दूसरी ओर उनके धन की भी बचत हो रही है।

स्वस्थ भारत – सुखी परिवार

अपनी हिन्दी

▸ हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना नहीं है वह तो स्वयं राष्ट्रभाषा ही है।

– कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

▸ भारत की एकता चाहने वालों को हिन्दी अपनानी ही पड़ेगी। – जे. वेंकटरमन्

▸ एक भाषा के बिना भारत में एकता नहीं हो सकती। और वह भाषा है हिन्दी।

–केशवचन्द्र सेन

आओ ऐसे बनें

महादेव गोविंद रानाडे

– मदनगोपाल सिंघल

माँ ने अपने बालक को मिठाई की एक बरफी खाने के लिये दी थी। उस समय एक मजदूर का बालक भी वहीं सामने खड़ा था। उसे देखकर माँ ने अपने बालक के हाथ में एक दूसरी बरफी का आधा टुकड़ा दिया फिर बोली– ''ले, वह तू खा ले और यह उस लड़के को दे दे।''

बालक ने अपनी माँ के हाथों से वह आधा टुकड़ा लिया और उसे चट से अपने मुँह में रखते हुए वह पहिले वाली पूरी बरफी उस मजदूर के बालक को दे दी।

गरीब बच्चा मिठाई पाकर प्रसन्नता से नाचता हुआ भाग गया।

''अरे! यह क्या किया तुमने?'' माँ ने कहा– ''उस लड़के को तो छोटा टुकड़ा देना था।''

''तुमने ही तो कहा कि इस हाथ की बरफी उसे दे दे।'' बालक ने कहा– ''तभी तो उसे मैंने वह दे दी।''

माता गद्‌गद् हो उठी। उसने अपने पुत्र को स्नेह पूर्ण नेत्रों से देखा। वह जानती थी कि बालक ने जानबूझकर ही बड़ा टुकड़ा उस बालक को दिया है।

सचमुच ही यदि कोई दूसरा बालक होता तो वह पूरी बरफी आप ही खाता चाहे उसकी माँ की आज्ञा उसके विपरीत ही क्यों न होती।

इस बालक का नाम था महादेव। बड़ा होकर वह मुंबई उच्चन्यायालय का न्यायाधीश बना। हम सब उन्हें **श्री. महादेव गोविंद रानाडे** के नाम से जानते हैं। –

जानकारी

रविवार की छुट्टी

जानिए क्या हैं इसका इतिहास। बच्चो! जिस व्यक्ति के कारण से हमें यह छुट्टी मिली है, उस महापुरुष का नाम है– **'नारायण मेघाजी लोखंडे'**।

नारायण मेघाजी लोखंडे ये ज्योतिराव फुले जी के सत्यशोधक आन्दोलन के कार्यकर्ता थे और कामगार नेता भी थे।

अंग्रेजों के समय में सप्ताह के सातों दिन मजदूरों को काम करना पड़ता था। लेकिन नारायण मेघाजी लोखंडे जी का यह मानना था कि सप्ताह में सात दिन हम अपने परिवार के लिए काम करते हैं।

लेकिन जिस समाज के कारण हमें नौकरियाँ मिली हैं, उस समाज की समस्या छुड़ाने के लिए हमें एक दिन छुट्टी मिलनी चाहिए।

उसके लिए उन्होंने अंग्रेजों के सामने १८८१ में आन्दोलन करना पड़ा। यह आन्दोलन प्रतिदिन बढ़ते गया। लगभग ८ वर्ष यह आन्दोलन चला।

आखिरकार १८८९ में अंग्रेजों को रविवार की छुट्टी की घोषणा करनी पड़ी। यह है इतिहास।

क्या हम इसके बारे में जानते हैं? जहाँ तक हमारी जानकारी है, पढ़े–लिखे लोग भी इस बात को नहीं जानते।

यदि जानकारी होती तो रविवार के दिन आनंद नहीं करते समाज का काम करते और यदि समाज का काम ईमानदारी से करते तो समाज में भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी, लाचारी यह समस्या नहीं होती।

बच्चो! इस रविवार की छुट्टी पर हमारा अधिकार नहीं है, इस पर **'समाज'** का अधिकार है। कोई बात नहीं, आज तक हमें यह ज्ञात नहीं था। किन्तु यदि आज हमें ज्ञात हुआ है तो आज से ही रविवार का यह दिन सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित करें।

मेरे समोसे

चित्रकथा: देवांशु वत्स

जिद की हार

– कुसुम अग्रवाल

महेश और विनोद दोनों सातवीं कक्षा के छात्र थे तथा एक ही शाला में पढ़ते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। दोनों एक साथ ही शाला जाते थे तथा एक साथ ही लौटते थे।

महेश एक खाते–पीते परिवार का लड़का था जबकि विनोद गरीब था। विनोद के पिता बड़ी कठिनाई से परिवार का पालन–पोषण करते हुए उसकी पढ़ाई का खर्चा उठा रहे थे। महेश सब कुछ जानता था इसलिए वह हर प्रकार से विनोद की पूरी सहायता करता था। प्राय: वह अपनी पढ़ाई–लिखाई की तथा खाने–पीने की चीजों में से कुछ चीजें विनोद को दे दिया करता था।

महेश पढ़ाई–लिखाई में तो बड़ा कुशल था परन्तु था बड़ा जिद्दी वह हर काम अपने मन अनुसार ही करता था। उसकी माँ उसे हमेशा समझाती। बेटा! जिद करना बुरी बात है कभी–कभी कहना भी मानना चाहिए। परन्तु वह अपनी माँ की बातों पर कान न धरता था।

एक दिन की बात है, शाला की छुट्टी के बाद महेश जब घर आया तो उसका मन क्रिकेट खेलने का हुआ। खाना–खाकर तथा हाथ में क्रिकेट का बल्ला व गेंद लेकर वह गली में जा ही रहा था कि माँ ने उसे कहा– ''ठीक है बेटा! जाओ पर एक बात ध्यान रखना खेलना मैदान में ही, सड़क पर नहीं। सड़क पर खेलने से तुम्हें भी नुकसान हो सकता है तथा अन्य किसी को भी।'' माँ ने सलाह दी।

''ठीक है माँ मुझे देर हो रही है।'' महेश ने बात को अनसुनी करते हुए कहा तथा जल्दी ही घर से निकल पड़ा। बाहर जाकर उसने अपने सभी मित्रों को एकत्र किया तथा माँ के कहने के बाद भी सड़क पर खेलना शुरू कर दिया।

बल्लेबाजी उसी ने शुरू की। अभी वह दो चार गेंद ही खेला होगा कि अचानक उसकी गेंद एक ठेले पर जाकर लगी जो कि सामने से आ रहा था। ठेले पर शायद कुछ काँच का सामान था जो कि तेज गेंद लगने से चकनाचूर हो गया था।

यह सब देखकर महेश तथा उसके सभी मित्र डर गए। वे सब भागकर अपने–अपने घरों में जा छिपे। यह सब इतना अचानक हुआ कि ठेले वाला यह जान भी न पाया कि किसने गेंद मारी तथा वह कहाँ गया। किसको शिकायत करता, किससे हानि वसूल करता, बेचारा वहाँ से चुपचाप चला गया।

अगले दिन महेश जब शाला पहुँचा तो देखा कि विनोद कुछ उदास है। उसने विनोद से उसकी उदासी

का कारण पूछा तो वह रोने लगा तथा बोला– ''आज शाला का शुल्क जमा करवाने का अंतिम दिन है तथा मेरा शुल्क आज भी जमा न हो सकेगा क्योंकि कल मेरे शुल्क के पैसे मेरे पिताजी नहीं ला सके।''

महेश ने पूछा– ''क्यों ?''

इस पर विनोद ने कहा– ''कल जब पिताजी अपना ठेला चला रहे थे तो किसी शरारती बच्चे ने उनके ठेले पर गेंद मारी जिससे ठेले पर रखी चूड़ियाँ व अन्य सामान टूट गया। अब बापू पहले वह सामान लाएँगे तथा फिर शुल्क देंगे। क्योंकि हमारी रोटी का साधन तो वही ठेला है।''

विनोद की बातें सुनकर महेश का सिर लज्जा से झुक गया। क्योंकि वह जानता था कि यह सब उसी का किया कराया है। यदि विनोद को यह पता चल जाए कि उसके मित्र ने ही उसका सब नुकसान किया है तो उसे बहुत बुरा लगेगा। उसने माँ की बात न मानकर सचमुच बहुत बड़ी गलती की है। अब इस गलती को सुधारना भी उसका कर्त्तव्य है।

यह सोचकर उसने विनोद से कहा– ''तुम चिंता मत करो मैं अपनी माँ से कहकर आज ही तुम्हारा शुल्क जमा करवा दूँगा।''

महेश ने घर आकर सारी बात अपनी माँ को बता दी।

माँ से रुपये लेकर उसने अपनी ओर से विनोद का शुल्क जमा करवा दिया। भविष्य में उसने जिद्द न करने तथा माँ की बात मानने की भी सौगंध खाई। वह जान गया था कि जिद्द करने से जाने–अनजाने में अपना तथा अपनों का भी नुकसान हो सकता है।

– राजसमंद (राजस्थान)

पुस्तक परिचय

बस्ते वाला बचपन

मूल्य १९५/-

प्रकाशक- सनातन प्रकाशन,
१४३, श्रीश्याम रेसीडेंसी, एस-२,
गणेश नगर, मेन निवारू रोड,
झोटवाड़ा, जयपुर-३०२०१२ (राजस्थान)

यह वरिष्ठ बालरचनाकार **श्री. रामगोपाल राही** का महत्वपूर्ण बाल कविता संग्रह है। उनकी ५० विविध विषयों पर केन्द्रित बाल कविताएँ बोधपूर्ण तो है ही मनोरंजन से भी भरपूर हैं। सुन्दर रेखाचित्रों से पुस्तक और मनोहर हो गयी है।

हम बच्चे हिन्दुस्तान के

मूल्य १५०/-

प्रकाशक- अमृत बुक्स
गली नं.-२, वर्मा कॉलोनी,
चंदाना गेट, कैथल (हरियाणा)

सुश्री मनजीत कौर 'मीत' ४७ सुन्दर बाल कविताओं का यह संग्रह भी यथा स्थान सुसंगत रेखाचित्रों सहित बालोपयोगी काव्य रचनाओं वाला यह संकलन बच्चों को अवश्य भाएगा।

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार **श्री. ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'** की एक्सप्रेस पब्लिशिंग नं.-८, ३-क्रास स्ट्रीट चेन्नई मद्रास तमिलनाडू-६००००४ से प्रकाशित चार पुस्तकें जिनका मराठी अनुवाद भी उपलब्ध है।

काँव काँव का भूत

मूल्य १०५/-

बारह बाल कहानियों का यह अत्यंत रुचिकर संग्रह है जो जीवन में निडरता व साहस जगाएँगी।

कुँए को बुखार

मूल्य १०५/-

चौदह बाल कहानियाँ जो आप में वैज्ञानिक दृष्टि से आसपास के परिपेक्ष्य को समझने की ललक जगाएँगी।

कौन-सा रंग अच्छा है?

मूल्य १२५/-

आपने लाल, हरे, नीले, पीले रंगों के नाम तो सुने होंगे इन रंगों के अतिरिक्त भी रंग होते हैं जो आपके जीवन के चित्र को आकर्षक बनाते हैं, जीवंत बनाते हैं। इन बारह बाल कहानियों में आप पाएँगे वही रंग।

आसमानी आफत

मूल्य १०५/-

मुसीबतें, कठिनाइयाँ किसे नहीं आती लेकिन जो साहस करता है वह आगे बढ़ जाता है और जो हार जाता है।

इस संग्रह में ग्यारह कहानियाँ है तो आपको आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगी।

गणपति जगवन्दन

– शिखर चंद जैन

हमारे देश में किसी भी शुभ कार्य से पूर्व भगवान गणेश की पूजा–अर्चना की जाती है। गणेश चतुर्थी और दीपावली के साथ विवाह के अवसर पर भी गणपति पूजन की परंपरा है। लेकिन मित्रों, विघ्नविनाशक एवं सद्बुद्धिदायक भगवान गणेश केवल भारत ही नहीं दुनिया के कई महाद्वीपों में श्रद्धा पूर्वक पूजे जाते हैं।

परंपरा पुरानी– विदेशों में यह परंपरा कोई नई नहीं है, बल्कि मध्यकाल से चली आ रही है। इसका प्रमाण मध्यकालीन युग से बने कई गणपति मंदिरों से मिलता है। दुनिया के कई देशों जैसे, दक्षिण और मध्य अमरीका, मेक्सिको, कम्बोडिया, श्रीलंका, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया, चीन, जपान और ईरान में गणेशजी के प्राचीन मंदिर उपस्थित हैं। इतना ही नहीं ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया, फ्राँस और जर्मनी में उपस्थित कई विशाल प्राचीन भवनों में भी गणपति प्रतिमाएँ मिलती हैं।

बुद्ध से अधिक लोकप्रिय गणेश– धर्म–मर्मज्ञ विद्वानों की मानें तो अंतर्राष्ट्रीय स्पर पर हमारे विनायक भगवान बुद्ध से भी अधिक लोकप्रिय हैं। विदेशी शोधकर्ताओं ने माना है कि हाथी के मुख वाले यानि गजानन भगवान की पूजा–अर्चना दुनिया के कई देशों में बुद्धि और समृद्धि के देवता के रूप में होती है। ऐसे कई प्रमाण विश्व के इतिहासकारों एवं पुरातत्व–विशेषज्ञों ने हेरिटेज साइट्स, प्राचीन मंदिरों खुदाई के समय मिले अवशेषों का अध्ययन करने पर पाए हैं। उल्लेखनीय है हमारी पवित्र धार्मिक परंपराओं एवं संस्कृत ने सदियों से पूरी दुनिया को प्रभावित किया है।

श्रीलंका में कई प्राचीन मंदिर– आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में वक्रतुण्ड के चौदह प्राचीन मंदिर हैं। ये मंदिर जाफना, एलेवेडी, बट्टिकलोओ, कोलम्बो, केन्डी और कतरगामा में हैं। पूरी तरह बौद्ध धर्मावलंबी देश होने के बाद भी यहाँ कई लोग अपने घर के प्रवेश द्वार पर गणपति की प्रतिमा लगाते हैं और उसकी पूजा करते हैं।

कई देशों में बने नए मंदिर– प्राचीन गणपति मंदिरों के अलावा कई आधुनिक गणेश मंदिर भी विदेशों में मिल जायेंगे। ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, फ्राँस, यू. के., यू. एस. आदि में उपस्थित यह मंदिर वहाँ पढ़ने या कमाने गए भारतीय श्रद्धालुओं ने बनवाए हैं। आधुनिक मंदिरों में सबसे विशाल कुछ मंदिर लंदन, न्यूयॉर्क, पेरिस, डरबन, हम्बर्ग, मेलबोर्न एवं एडमोंटन शहरों में हैं।

कश्मीर घाटी में प्राकृतिक गणेश– गणपति का ऊँकार रूप स्वयंभू माना जाता है। यानी यह स्वयं ही अपना सृजन करता है, विस्तार करता है और स्वयं को व्याप्त करता है। अमरीकी शोधकर्ता एलाइस गेटी, जिन्होंने, **'गणेश: हाथी के मुख वाले भगवान'** किताब लिखी है, ने लिखा है कि कश्मीर में गणेश की कुदरती रूप से बनी कई मूर्तियाँ देखकर मैं अभिभूत हूँ। कश्मीर घाटी में गणपति के तीन महत्वपूर्ण तीर्थ हैं। पहला– लीडर नदी के पास गणेश बल में, दूसरा– हरिपर्वत की तराई में भीम स्वामिन के नाम से, और तीसरा– किशनगंगा नदी की चट्टान पर गणेश घाटी के नाम से।

– हावड़ा
(पश्चिम बंगाल)

मुझसे होगा?

– एस. भाग्यम् शर्मा

ईशान में हमेशा से ही आत्मविश्वास की कमी थी। उसकी आवाज बहुत बढ़िया, उसकी स्मरण शक्ति अपार और गाना भी बहुत अच्छा गाता था। परंतु जब भी कोई आयोजन होता वह पीछे रहता।

''तुमसे होगा अपना नाम दो।'' कहने पर जब भरी सभा को देखता तो उसे कँपकपी छूटती। वह वैसे तो दूसरों से बड़ी अच्छी तरह बात करता वाद–विवाद भी कर लेता पर केवल अपनों के बीच। जब निबंध आदि लिखाते तो हमेशा अधिक अंक लाकर प्रथम आता।

उसे उसकी शिक्षक माधवी ईशान! तुम्हारा संकोच ही तुम्हारी ख्याति में रुकावट है।'' कहकर दुखी होती। एक दिन उसने एक संस्कृत सुभाषित का पूछा।

ईशान बोला– ''काँटों के बीच चंदन का पेड़ मिलता है। हिरण के पेट में कीमती कस्तूरी मिलती है। समुद्र के नमकीन पानी से कीमती मोती मिलता है। वैसे ही एक अच्छे बुद्धिशाली आदमी किस कुल में जन्म लेगा कहने वाला कोई नहीं है।'' कहकर बैठने को हुआ ईशान।

''ईशान! तुम्हें ही तुम्हारे माँ–बाप का, इस शाला का, मेरा और अपना नाम ऊँचा करने के लिए तुम्हें अपना यह संकोच और डर छोड़ना होगा। आप इस संसार में आए हो तो कुछ करके दिखाओ आपके पास योग्यता है।

सोना जमीन के नीचे है तो उसका कोई सम्मान नहीं है। चन्दन के पेड़ को काट उसकी लकड़ी को घिसने से ही सुगंध आती है। दूसरे हँसी उड़ाएँगे और पुरस्कार नहीं मिलेगा तो सम्मान कम होगा ऐसी सब बातें मत विचारो।''

नचिकेता एक लड़का था। वह तुम्हारी आयु का ही था। उसके पिता बूढ़ी गायों को दान दे रहे थे। अपने पिता से बिना डरे साहस के साथ पूछा– ''आप जो कर रहें हैं वह गलत ही है ना। उसने तीन बार पूछा। उसके पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया। ''मुझे किसको दान दोगे?'' नचिकेता ने पूछा तो वे बोले– ''यम को।''

''आपसे होगा।'' बिना संकोच के पूछा और बिना डर के यमलोक में जीवित गया वहाँ यम से भेंट की बहुत सारे प्रश्न पूछे व बहुत विषयों को बताकर पुराण में अपना नाम अंकित किया।

भागीरथ ने तपस्या कर स्वर्ग की गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए। ज्योतिष शास्त्र बोलते ही अर्जुन के भाई सहदेव याद आते हैं। मल्ल युद्ध के लिए भीम, अर्जुन अर्थात् धनुष विद्या। कर्ण दान के लिए। वे सब अपने-अपने क्षेत्र में माने हुए लोग थे।''

''तुम ईशान! घर के दरवाजे बंद करके बोलने का अभ्यास करो। अपने मित्रों के सामने आँखें बंद कर बोलो। अपनी आवाज को रिकॉर्ड करके सुनो। उसमें जो गलतियाँ दिखे उसे सुधारो। किसी को पानी में धकेल दो तो अपने बचाव में तैरना सीख जाता है।'' उनके ऐसे कहते ही घंटी बजी। सब बच्चे घर चले गए। ईशान ने विचार किया मुझे भी ऐसा कर अपने संकोच व डर से मुक्ति पाना चाहिए।

वाद-विवाद का दिन आ गया। कई बच्चों ने भाग लिया। पाँच मिनिट पहले ही विषय बताया- ''मुझसे नहीं हो सकता, ऐसा कुछ नहीं!'' यह विषय था। केवल पाँच मिनिट का समय था। सब पाँच मिनिट में अपने बात को समाप्त नहीं कर पा रहे थे।

ईशान के पिताजी ने कहा था पहचान वालों की ओर मत देखो देखोगे तो घबराओगे। जैसे ही ईशान का नाम पुकारा तो जल्दी में उसके पैर में ठोकर लगी, पर संभल गया।

ईशान मन में सोचा मुझे शांति से जाना है। उसने सबको प्रणाम कह कर शुरू किया।

''आकाश में वायुयान चला सकते हैं पर सूर्य और चंद्रमा व नक्षत्र को हरा नहीं सकते। तूफान और भयंकर वर्षा को हम रोक नहीं सकते हम बिजली के पंखे से हवा प्राप्त कर सकते हैं परंतु प्राण वायु देने वाली प्राकृतिक हवा अपनी शक्ति के लिए अहंकार नहीं करता।

सब काम एक ही नहीं कर सकता। जो चिड़िया घोंसला सुंदर-सा बनाती है। हम वैसा नहीं बना सकते। मकड़ी अपने मुँह की लार से कैसा जाल बुनती है और तो और मधु-मक्खियाँ फूलों को ले जाकर शहद बनाती है। फैक्ट्री में जो नहीं बन सकता।

सबके अपने अलग काम है। भूमि को खोदते हैं तो अपार जल की प्राप्ति होती है।

यह सब कहते हुए ईशान का डर छू-मंतर हो गया। और वह बोलता चला गया। सब लोग ध्यान से सुन रहे थे। सन्नाटा छाया था। पहला पुरस्कार कहने की आवश्यकता है क्या ईशान को ही मिला।

- जयपुर (राजस्थान)

दिल में हिंदुस्तान

देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ

SURYA

MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES

आत्मनिर्भर भारत की पहचान

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | **Toll Free No.: 1800 102 5657**

कविता

बंदर

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

एक था बंदर, लिये चुकंदर।
जा पहुँचा शाला के अंदर।।
बच्चों ने उसको दौड़ाया।
झट से वह बरगद पर आया।।
जोर–जोर करता वह खों–खों।
बच्चे बोल रहे थे हों–हों।।
मुँह बिचकाता, पूँछ हिलाता।
आँख नचाता, दाँत दिखाता।।
लगा झूलने पकड़ के डाली।
बच्चे बजा रहे थे ताली।।
चीनू ने जब फेंका केला।
आया बंदर छोड़ झमेला।।
केला पाकर भरी उछाल।
पकड़ी उसने ऊँची डाल।।
उछल–कूद की उसने बंद।
बच्चों को आया आनंद।।

– लखनऊ (उ. प्र.)

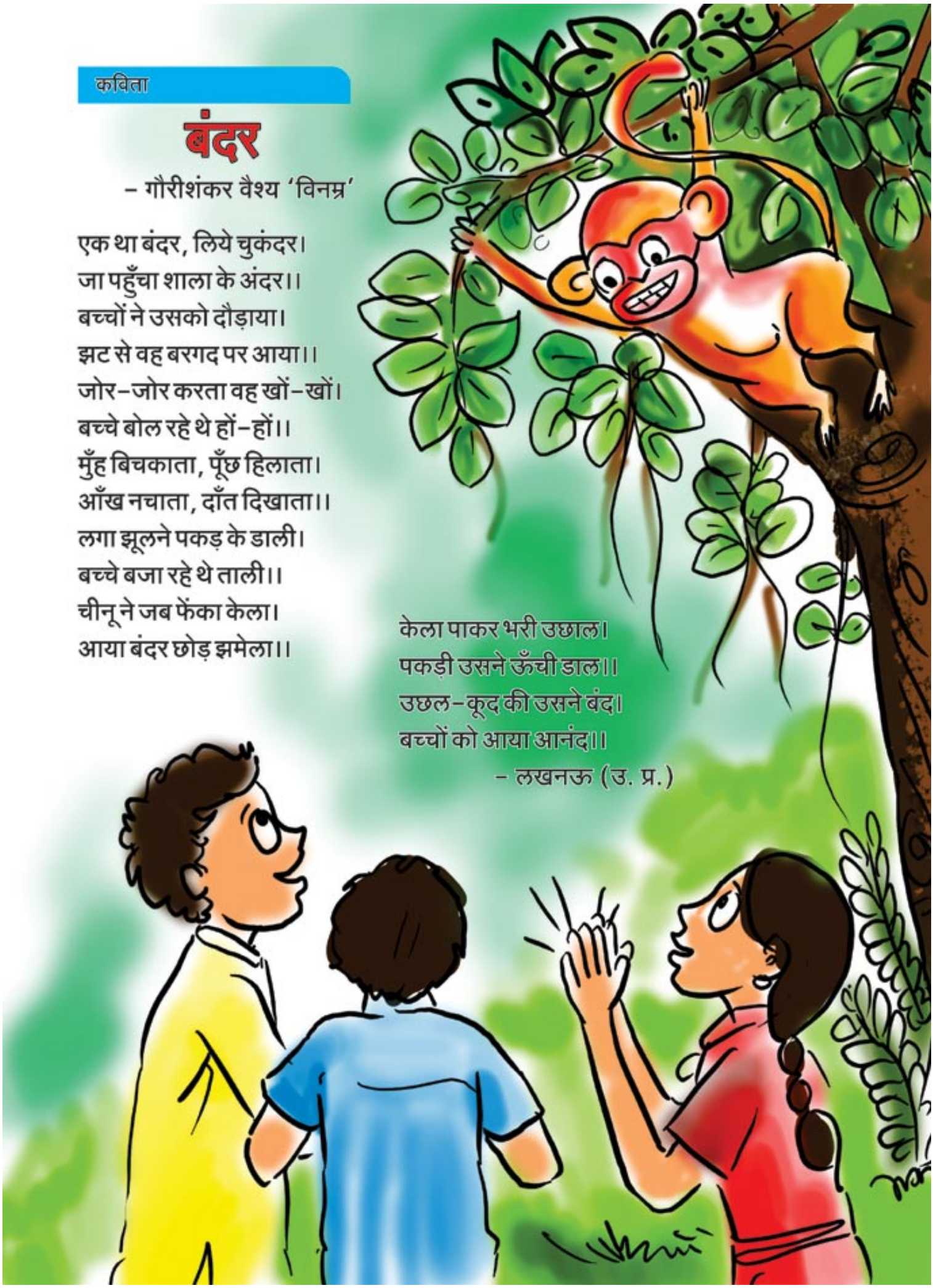

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०८/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०८/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना